प्राणकोश
(कविता संग्रह)

साध्वी मोहनां
साध्वी प्रेमलता } (श्रीडूँगरगढ़)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्राणकोष

साध्वी मोहनां
साध्वी प्रेमलता

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संपादक : साध्वी मोहनां
साध्वी प्रेमलता

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं- 341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (01581) 226080 / 224671
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

प्रथम संस्करण : मार्च २०१४

मूल्य : १२०/- (एक सौ बीस रूपये मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिण्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शुभाशंसा

कुछ व्यक्ति निसर्ग कवि होते हैं और कुछ अभिप्रेरित होकर कविता लिखते हैं। आचार्य तुलसी की अभिप्रेरणा से तेरापंथ के साध्वी-समाज की काव्य चेतना परिस्पन्दित हुई और अनेक साध्वियां कविता लिखने लगी।

साध्वीश्री मोहनांजी और साध्वीश्री प्रेमलताजी उसी साध्वी-समाज के प्रतिभा सम्पन्न-व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपनी साहित्यिक, काव्यात्मक प्रतिभा से कतिपय प्रतिष्ठित कवियों को प्रभावित किया है।

'प्राणकोश' साध्वीद्वय द्वारा समय-समय पर लिखी गई कविताओं का एक संग्रह है, जिसमें उन्होंने अपनी आस्था के स्वस्तिक उकेरे हैं, बाल जगत में संस्कारों की सौरभ भरने का आयास किया है और युगीन परिस्थितियों का भी चित्रण किया है। शब्द-शिल्पन और भावप्रवणता की सहचारिता ने प्रस्तुत संग्रह में सत्य और सौन्दर्य दोनों को मुखर किया है।

तीन-तीन आध्यात्मिक गुरुओं की प्रत्यक्ष या परोक्ष कृपा से अनुप्राणित साध्वीद्वय इस दिशा में कुछ नए हस्ताक्षर करती रहें, यही शुभाशंसा है।

21 मई 2014 **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
भिवानी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशकीय

तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी एवं दशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी महान साहित्यकार थे। आचार्यद्वय ने प्राकृत, संस्कृत एवं राजस्थानी सहित हिन्दी भाषा में विपुल साहित्य का सृजन किया तथा धर्मसंघ की साहित्य संपदा को समृद्ध बनाने में अमूल्य योगदान दिया। उनके शासनकाल में उनकी पावन प्रेरणा एवं महनीय मार्गदर्शन में धर्मसंघ के अनेक साधु व साध्वियों ने भी साहित्य के क्षेत्र में अच्छा विकास किया। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी इसी परम्परा को अनवरत आगे बढाते हुए साहित्य संपदा को समृद्ध बना रहे हैं तथा साहित्य के क्षेत्र में साधु-साध्वियों की प्रतिभा को उजागर करने के लिए अपना पावन पथ-दर्शन प्रदान कर रहे हैं।

साहित्य की अनेक विधाओं में काव्य साहित्य का भी अपना एक वैशिष्ट्य है। काव्य या कविता साहित्य की वह विधा है, जिसमें किसी मनोभाव या कल्पना को चुने गये शब्दों में अर्थात् छंदों की शृंखलाओं से विधिवत् बांधा जाता है। रस अर्थात् मनोभावों का सुखद संचार काव्य की आत्मा है। जिस काव्य अथवा साहित्य में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की भावना निहित होती है, वह काव्य या साहित्य सबसे उत्तम माना जाता है।

तेरापंथ धर्मसंघ की वरिष्ठ साध्वीश्री मोहनांजी एवं साध्वीश्री प्रेमलताजी द्वारा संयुक्त रूप से रचित काव्य संग्रह है-'प्राणकोश'। तीन भागों में विभक्त इस काव्य संग्रह के प्रथम भाग 'प्रणति-प्रशस्ति' में भगवान महावीर एवं तेरापंथ के आचार्यों की स्तुति की गई है। दूसरे भाग 'युग परिवेश' में देश की समसामयिक परिस्थितियों एवं समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उनके समाधान के सूत्र भी सुझाए गए हैं तथा तीसरे भाग 'संस्कार सौरभ' में बच्चों के नैतिक व चारित्रिक विकास हेतु प्रेरक संदेश दिए गए हैं। साध्वीद्वय की साहित्यिक प्रतिभा उनकी कुशल लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत काव्य में स्पष्टतः मुखर हो रही है। जैन विश्व भारती साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए ऐसी उपयोगी काव्य कृति का प्रकाशन कर गौरवान्वित है।

आशा है प्रस्तुत कृति अपने नाम के अनुरूप सुधी पाठकों में प्राण संचार का माध्यम बनती रहेगी।

२५ फरवरी २०१५
लाडनूं

धरमचंद लुंकड़
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुभूतियों का इन्द्रधनुष

जैनधर्म के विश्वविख्यात तेरापंथ सम्प्रदाय की वरिष्ठ साध्वी सम्माननीया मोहनांजी तथा उनकी सहयोगिनी शतावधानी साध्वी प्रेमलताजी के संयुक्त प्रयास से रचित यह काव्य-संग्रह 'प्राणकोश' आध्यात्मिक भावनाओं के साथ- साथ भारत की भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय वर्तमान समस्याओं से भी साक्षात् कराता है।

वैशेषिक दर्शन के आरंभ में जो धर्म की परिभाषा कणाद ऋषि ने दी है, उसके अनुसार भौतिक (लौकिक) तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार की सिद्धि ही धर्म की वास्तविक परिभाषा है –

'यतोऽभ्युदयनि:श्रेयससिद्धि: स धर्म:'

मुझे यह सर्वाधिक पसंद है। धर्म का यह स्वरूप वर्तमान काल में भी प्रासंगिक है।

'प्राणकोश' (कविता संग्रह) की कविताएं तीन भागों में विभक्त की गई है। प्रथम भाग 'प्रणति-प्रशस्ति' में जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर तथा पूज्य आचार्यों के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित किए गए हैं।

तेरापंथ सम्प्रदाय के संस्थापक परमपूज्य आचार्य भिक्षु के अतिरिक्त जैनागमों के मर्मज्ञ, युगद्रष्टा, युगस्रष्टा, प्रयोगवादी आचार्य श्री तुलसी एवं उनके उत्तराधिकारी विलक्षण प्रतिभा के धनी, प्रज्ञापुरुष, मौलिक चिन्तक, सुविख्यात दार्शनिक, वैज्ञानिक ध्यान पद्धति प्रेक्षाध्यान के आविष्कारक आचार्य श्री महाप्रज्ञजी तथा इन दोनों सूर्यों की ज्योति से आलोकित विदग्ध विद्वान, तेजस्वी, तपस्वी, मनस्वी, वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमणजी जैसे शिखर पुरुषों की प्रशस्तियां संकलित हैं। जैसे :-

तुम्हारी आंखों में आकाश
गिरा में सरस्वती का वास
जिधर तुम कर देते संकेत
उधर मुड़ जाता दिव्य उजास।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गाए गीत अनन्त तुम्हारे
फिर भी तुम अज्ञेय रहे हो
सहज साधनासिक्त हृदय था
इसीलिए श्रद्धेय रहे हो।

राष्ट्रसंत को पुण्य प्रणाम
जिसके पौरुष से संरक्षित
मानवता की छवि अभिराम
राष्ट्रसंत को पुण्य प्रणाम

करली तुमने पूर्ण प्रगति है
उसी पंथ पर मेरी गति है
चलने का संकल्प लिए हूँ
मैं सरिता रत्नाकर तुम हो।
मैं हूँ दीप दिवाकर तुम हो।।

कोटि जन का श्वास था जो
दूर से भी पास था जो
शक्ति था, विश्वास था जो
सुनहला इतिहास था जो
एक ही वह नाम तुलसी

दो नयन क्या फिरे असंख्य नेत्र ढल पड़े
दो चरण क्या थमे असंख्य पग चल पड़े

दुर्लभ सूर्य-युगल के दर्शन
भरते हैं प्राणों में पुलकन
ढूंढ़ रहा पर महासूर्य को
वज्राहत- सा यह विरही मन

तुलसी- महाप्रज्ञ युग की है कथा विलक्षण
'एक प्राण दो देह', उक्ति के बने निदर्शन
गुरु में शिष्य, शिष्य में गुरु का है प्रतिबिंबन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तपो तुम सहस्रांशु समान
उगाओ गण में स्वर्ण विहान
धरित्री को तुम पर अभिमान

दूसरे भाग 'युगपरिवेश' में देश की वर्तमान परिस्थितियों और समस्याओं पर बहुआयामी प्रकाश डाला गया है। दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, जातिवाद, छुआछूत, अपहरण, बलात्कार, हिंसा, साम्प्रदायिक संकीर्णता आदि कितने ही संक्रामक रोग आर्यावर्त और सोने की चिड़िया कहलाने वाले इस देश में फैले हुए हैं। इन रोगों के समुचित उपचार के उपाय भी इस भाग में उपलब्ध हैं।

यह भारतभूमि हमारी है
इसकी संस्कृति का संरक्षण
हम सबकी जिम्मेदारी है

रक्षक हैं वास्तव में भक्षक
डसते जनता को बन तक्षक

नेताओं में हो देश प्रेम
सीखें संतों से योग क्षेम

प्रामाणिक हर इंसान बने
तप-संयम- त्याग प्रधान बने
संशोधित नया विधान बने
फिर विश्वमान्य पहचान बने

है महारोग यह छुआछूत
स्वार्थी तत्त्वों द्वारा प्रसूत

भस्म हुई अगणित कन्याएं इस दहेज की होली में
इसी प्रथा के कारण कितनी बैठ न पाई डोली में

इस भाग में 'पुरुषो, अपनी हार न मानो', 'इतिहास के आंसू', 'पिया जिसे पीयूष मान कर', 'कोई न किसी का साथी है', 'क्या भूलें क्या याद करें', 'क्या मंदभाग्य का रोना है', 'कविते! क्या तू कुंठित है', 'कवि, यह

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कलम पुरानी है' आदि कितनी ही कविताएं ऐसी हैं जिनमें रचनाकार की कल्पनाशीलता, कवित्व शक्ति, अभिव्यक्ति शैली तथा यथार्थवादिता स्पष्ट मुखर हुई है।

इस भाग की अधिकांश कविताएं अत्यन्त उत्साहजनक, उद्‌बोधक और साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। कतिपय कविताओं की पंक्तियां :–

मैं अगाया गीत गाऊँ
मौन को माध्यम बनाऊँ

कविते, क्या तू कुंठित है?
लघु–गुरु पर कुछ बंधन थे
सुनियोजित स्वर व्यंजन थे
अनुप्रास, लय, यति, मात्रा
आकर्षक आभूषण थे
तटबन्धों को तोड़ किधर
बहने को उत्कंठित है?

कवि यह कलम पुरानी है
नई कलम से संसृति में
नई चेतना लानी है

इसका अर्थ 'मुक्त छंद' की कविता को नीरस गद्य बताना नहीं है।

पिया जिसे पीयूष मान कर निकला वही गरल है।
सत्य जिसे समझा अन्तर्हित उसमें दुर्दम छल है।।

विष को हँस–हँस पीते जाओ
बन नीलकंठ जीते जाओ

कैसे कह दूं यह जीवन वरदान नहीं है
आंसू में क्या छिपी मधुर मुस्कान नहीं है ?

कोई न किसी का साथी है
दीपक में है यदि स्नेह भरा
तो जलती रहती बाती है

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पुरुषो! अपनी हार न मानो
अक्षय कोष शक्ति का भीतर
एक बार उसको पहचानो

तीसरे भाग 'संस्कार सौरभ' में भारत के उज्ज्वल भविष्य, राष्ट्र की शक्ति और प्रगति के प्रतीक नौनिहाल बच्चों के चरित्र- निर्माण के लिए प्रेरणादायक एवं शिक्षाप्रद संदेश दिए गए हैं। जैसे :-

बच्चो, दो संगत पर ध्यान
करना यदि जीवन-निर्माण

प्यारे बच्चो, सीखो ज्ञान
शिक्षा जीवन का वरदान

बच्चो तुम, गुणवान बनो
धरती के अभिमान बनो

बोलो बच्चो, मीठे बोल
हर अक्षर हीरों से तोल

सीखो बच्चो, प्रेक्षाध्यान
जीने की यह कला महान

इस भाग की कई कविताओं में जीवन की नश्वरता का मार्मिक चित्रण है तो कई कविताओं में संतों के त्याग, तप और निस्पृहता की झलक है।

यह एक सुखद आश्चर्य है कि संन्यासिनी, तपस्विनी, त्यागी एवं अनासक्त साध्वियां सांसारिक विषम स्थितियों से निपटने के लिए दिशाबोध देती हैं। संत- महात्माओं का देश की वर्तमान समस्याओं और अपेक्षाओं की ओर ध्यानाकर्षण धर्म की उपर्युक्त परिभाषा का समर्थन करता है। जो आज समय की मांग है।

उदयभानु 'हंस'
कविभूषण, साहित्यालंकार
राज्यकवि (हरियाणा), अणुव्रत लेखक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अपनी कलम से

काव्य-कला

विभिन्न साहित्यिक विधाओं में काव्य-विद्या का विशिष्ट स्थान है। यह स्वल्प शब्दों में बहुत कुछ कहने में समर्थ है। इसके माध्यम से सागर को गागर में प्रस्तुत किया जा सकता है। भावपक्ष काव्य का प्राण होता है और कलापक्ष उसका शरीर। प्राणों की उपस्थिति में ही शारीरिक सौन्दर्य की मूल्यवत्ता होती है।

मात्रा, गति, यति आदि काव्य के नियामक तत्त्वों से नियंत्रित और अनुप्रास, अलंकार आदि से सुसज्जित काव्य में यदि भावना, कल्पना, चिन्तन और अनुभूति का दारिद्र्य हो तो वह क्षणिक कर्ण-विलास के पश्चात् जल-तरंगवत् विलीन हो जाता है। वह न तो समय के पट पर अपने शाश्वत हस्ताक्षर अंकित कर पाता है और न ही लोक-चेतना को आन्दोलित करने में सफल होता है।

आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में - जिस कवि के मन में देश की अव्यवस्थाओं, समाज के गलत मूल्य-मानकों और व्यक्ति के असम्यक् दृष्टिकोण को बदलने की बेचैनी नहीं होती, उसके काव्य में शब्द-शिल्पन हो सकता है पर प्राण नहीं होते।

कविता में अकेले कवि का हृदय ही नहीं बोलता, वह त्रैकालिक यथार्थ का प्रतिनिधित्व करती है। कविता के झरोखे से अतीत के आलोक में वर्तमान का रेखाचित्र और भविष्य का संदर्शन झलकता है। उसमें देश, समाज और राष्ट्र की परिस्थिति, परिवेश और संस्कृति मुखर होती है। रमणीयता, रसात्मकता और लयात्मकता की यह त्रिवेणी अपनी अजस्रधारा में पाठक/श्रोता को अवश बहा ले जाती है। उसे तादात्म्यानुभूति से भावुक बना देती है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्राणकोश

'प्राण' शब्द बहुत व्यापक है। जीवधारियों का तो यह आधार है ही, निर्जीव वस्तुओं, विशेषत: कलाकृति, साहित्यिक कृति आदि की श्रेष्ठता और जीवन्तता प्रदर्शित करने के लिए भी उनमें प्राण शब्द का आरोपण किया जाता है।

वेदांत दर्शन में '**प्राणमय कोश**' के घटक के रूप में प्राण का उल्लेख है। वहां आत्मा को पांच कोशों (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय) से परिवृत माना गया है। इन पांचों के योग से शरीर संघटित होता है- ऐसी अवधारणा है। पांचों प्राणों (प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान) तथा पांचों कर्मेन्द्रियों के समूह को '**प्राणमय कोश**' कहा गया है।

छांदोग्य उपनिषद् में जीवनी शक्ति, वाक्, चक्षु, श्रोत्र और मन इन सबको 'प्राण' माना गया है।

आचार्य हेमचन्द्र ने नाक के अग्रभाग, हृदय, नाभि और पादांगुष्ठ में स्थित वायु को प्राणवायु या प्राण कहा है।[(a)]

विज्ञान की भाषा में प्राणवायु **(Oxygen)** वातावरण में व्याप्त एक ऐसी गैस है जो स्वयं वर्ण-गंध-रसशून्य होते हुए भी शरीरधारी चेतनजगत को जीवित रखने में अत्यन्त अपेक्षित है। सांस के द्वारा इसका ग्रहण होता है। कभी अपेक्षा होने पर कृत्रिम साधनों से भी इसकी सम्पूर्ति की जाती है।

जैन सिद्धांत के अनुसार प्राण का अर्थ है- जीवनी शक्ति।[(b)] प्राण दस हैं-

1-5 - पांच इन्द्रियां-श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रस, स्पर्श।
6-8 - तीन बल - मन, वचन, शरीर।
9 - श्वासोच्छ्वास **10** - आयुष्य।

(a) अभिधानचिन्तामणि: **4/174**
(b) जीवनशक्ति: प्राणा: - जैन सिद्धान्तदीपिका

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ये प्राण पुद्गलसहायापेक्ष होते हैं। संसारी प्राणियों में प्राणों की संख्या उनकी चेतना के विकास के अनुसार होती है।

अल्पतम विकसित चेतना वाले सूक्ष्म प्राणियों में भी कम से कम चार प्राण (स्पर्शनेन्द्रिय प्राण, कायबल प्राण, श्वासोच्छ्वास प्राण और आयुष्य प्राण) अनिवार्य रूप से होते हैं।

कोश का अर्थ है- खजाना, निधि, भण्डार, संग्रह .....।

प्राणकोश - प्राणों का भण्डार। जिसमें प्राण निहित हों।

प्रस्तुत कृति : प्राण कोश ?

संघबद्ध साधना करने वाले साधक का संघ ही जीवन, प्राण होता है। सर्वस्व होता है। उसके लिए संघ आश्वास और विश्वास का सुदृढ़ आधार है। संघ का महत्त्व सर्वोपरि है। संघनायक के लिए भी संघ सम्मान्य होता है। अतः प्रस्तुत कृति का प्रारम्भ भी 'है संघ हमारा प्राणकोश' इस पंक्ति से हुआ है। जो कृति के नामकरण का एक आधार बनी है। सम्पूर्ण कृति में इस नाम की सार्थकता का समीकरण काव्यरसिक पाठकों पर निर्भर है।

प्रेरणा-सहकार

मेरी साहित्य-साधना में प्रवृत्ति के मूल प्रेरणास्रोत हैं **आचार्य श्री तुलसी।** बीसवीं सदी के महान प्रतापी, तेजस्वी राष्ट्रसंत। आदेयवचन-सम्पदा-सम्पन्न गुरुदेव के वात्सल्यपूरित बोल मेरे कानों में प्रतिपल जागरणा के शंखनाद की तरह गूंजते रहते हैं और एक अनिर्वचनीय स्फुरणा से मेरे मन-मस्तिष्क को झंकृत करते रहते हैं - ''बाई पढ़े या न पढ़े तुम्हारी मर्जी है। परन्तु काम में न लेने से जैसे मशीन के जंग लग जाता है, वैसे ही उपयोग में न लेने से बुद्धि भी कुंठित हो जाती है।'' उनके अनंत उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना असाध्य-साधन का निष्फल प्रयास होगा। फिर भी पूज्यप्रवर के जन्म शताब्दी वर्ष में शताधिक कविताओं के संग्रह '**प्राणकोश**' की प्रस्तुति मेरे लिए किंचित् तोष का विषय है।

प्रज्ञा के प्रतिमान आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने मेरी तन्द्रिल साहित्यिक रुचि को समय-समय पर जो प्राण-पोषण प्रदान किया, वह शब्दातीत है, अनुभूतिगम्य है। उनके कृपा-प्रसाद से आप्यायित मेरा अन्तस्तल उनके प्रति निःशेषभाव से श्रद्धाभिभूत है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करुणा के अतल सागर महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण के प्रति मेरे सांस-सांस में असीम आस्था उच्छ्वसित है। यह पूर्वार्जित पुण्य-परिपाक है। संघ के सुमेरु पुरुष का शीष पर वरदहस्त मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है, संयम-साधना का आधार है।

सिद्धलेखिनी, साहित्यस्रोतस्विनी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की श्रमनिष्ठा और स्वाध्यायपरायणता संघ के लिए अप्रमत्तता का स्वयंभू संवाद है। उनकी प्रश्नायित दृष्टि और उद्‌बोधक संदेशों ने मेरे ठिठकते कदमों में स्फुरणा का संचार कर उन्हें गतिशील बनाया है।

'**प्राणकोश**' में पांच-छः दशक पूर्व लिखी गई कविताएं भी हैं, जो साध्वी श्री हरकंवर जी (फतेहपुर) की ममताविल उदारता की फल-परिणति है। उन कविताओं की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए अपेक्षित संशोधन-परिमार्जन करके उन्हें युगीन भाषा और शैली में ढालने का प्रयास किया गया है।

मेरी अग्रजा साध्वी चांदांजी (श्रीडूँगरगढ़) की प्रारम्भ से ही प्राप्त सत्प्रेरणा की पुण्य स्मृति से मेरे रोम-रोम सजल हैं। उनका मुझे अपेक्षा से भी अधिक सहयोग सदैव मिलता रहा।

साध्वी किरणप्रभाजी की निश्छल हार्दिक सद्‌भावना मेरी स्मृति से ओझल नहीं हो सकती। साध्वी गरिमाश्रीजी का सक्रिय योगदान इसमें प्रतिबिंबित है।

'**प्राणकोश**' को प्रकाशनार्ह बनवाने का सम्पूर्ण श्रेय साध्वी लोकप्रभाजी के साग्रह भावप्रवण अनुनय को है। इनकी हार्दिक उत्सुकता, उत्साह और प्रमोद भावना प्रवर्धमान रहे, यह शुभाशंसा है। प्रत्येक कृति के प्रूफ-संशोधन में ये आत्मीय भाव से बराबर जुड़ी रही हैं।

साहित्य वाचस्पति प्रो० उदयभानु हंस की उदारता अविस्मरणीय है। वार्द्धक्य और दृष्टि-दौर्बल्य को चुनौती देते हुए उन्होंने (प्राणकोश) का समग्ररूप से पारायण कर 'अनुभूतियों का इन्द्रधनुष' के रूप में भावाभिव्यक्ति की। इस उम्र में भी उनकी साहित्यिक स्फुरणा युवा है।

20 मार्च 2014
सिवानी मण्डी (हरियाणा)

साध्वी माहनां
(श्रीडूँगरगढ़)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्राणकोश

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रमणिका पृष्ठ संख्या

1. प्रणति-प्रशस्ति

1.	यह संघ हमारा प्राणकोश	1
2	मर्यादा धरणी, मर्यादा अम्बर है	3
3.	राजहंस, सर को मत छोड़ो	5
4	सिद्धार्थपुत्र, शत-शत प्रणाम	7
5	ज्योतिर्धाम, तुम्हें प्रणाम	10
6.	मैं हूँ दीप, दिवाकर तुम हो	13
7	जब तुम धरती पर आए थे	14
8	गुरु बिना मिले भगवान नहीं	16
9.	नमन है देवों के भी देव	19
10.	तपःपूत चरणों में वन्दन	20
11.	अभिनन्दन है, अभिनन्दन है	22
12.	वीर भिक्षु अभिवन्दन शत-शत	23
13.	दीप जो तुमने जलाया	24
14.	कर दिया सब कुछ समर्पण	26
15.	समर्पण है क्या इसका नाम ?	27
16.	ज्योतिपुरुष की जय-जयकार	30
17.	राष्ट्रसंत को पुण्य प्रणाम	32
18.	तुम ज्योति बांटने आए हो	34
19.	अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी	35
20.	वन्दन श्रुत-सम्राट	37
21.	प्रज्ञापर्व : अमर अवदान	39
22.	एक ही वह नाम तुलसी	42
23.	दो नयन क्या फिरे	43
24.	संघ जब उदास था	45

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

25.	तुम हमारे, हम तुम्हारे	46
26	अभिनन्दन	48
27	महाप्रज्ञ के जन्म-दिवस पर	49
28	दुर्लभ सूर्य-युगल के दर्शन	50
29	आज क्या हो गया ?	51
30	हंस उड़ चला	52
31	धरित्री के हे अमर सपूत	53
32	महाप्रज्ञ थे विरल	54
33	गीतकार हो गया अगोचर	56
34	मनुज रूप में था वह ईश्वर	58
35	तुलसी-महाप्रज्ञ युग	59
36	महाप्रज्ञ को नमन हमारा	60
37	महाश्रमण के अभिनन्दन में	62
38	कृतकृत्य नयन	63
39	तपो तुम सहस्रांशु समान	64
40	महाश्रमण! कोटि नमन	66
41	वंदन बारम्बार	68
42	अभिनन्दन है आज तुम्हारा	69

2. युग-परिवेश

43.	यह भारतभूमि हमारी है	71
44.	ऋषि-मुनियों ने सिखलाया था	74
45.	है महारोग यह छुआछूत	76
46.	भस्म हुई अगणित कन्याएं	77
47.	कुटिल, काला नाग	78
48.	इतिहास के आंसू	80
49.	कवि, यह कलम पुरानी है	83

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

50.	कविते, क्या तू कुंठित है ?	85
51.	निर्मम विधान	87
52.	नियति निराली	89
53.	मैं अगाया गीत गाऊँ	90
54.	पिया जिसे पीयूष मान कर	92
55.	निष्फल है केवल वेश रुचिर	93
56.	दीप मैं कैसे जलाऊँ ?	94
57.	अश्रुपूरित नयन	95
58.	क्या भूलें ? क्या याद करें ?	96
59.	कोई न किसी का साथी है	97
60.	दिल का दुख	99
61	विष को हँस-हँस पीते जाओ	101
62.	सुहाता नहीं मुझे व्यवहार	103
63.	झुकना सदा न श्रेयस्कर	105
64.	क्या मंदभाग्य का रोना है ?	107
65.	पुरुषो, अपनी हार न मानो	109
66.	हार से न निराश होते	111
67.	मत समझो मैं हार रही हूँ	112
68.	आंसू में क्या छिपी ?	113
69.	सुधा किसी को मिल पाए तो	114
70.	तप की सौरभ	115
71.	तप का है ऊँचा स्थान	116
72.	चल पड़े जो चरण	117
73.	चरण चलते हैं चलेंगे	118
74.	पहले अपना घर संभालो	119
75.	यदि अपना इतिहास पढ़ो तो	120

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3. संस्कार-सौरभ

76.	बच्चों की जीवन फुलवारी	123
77.	बच्चों का जीवन निर्मल है	124
78.	बच्चो, दो संगत पर ध्यान	125
79.	बच्चो, कभी न करो प्रमाद	126
80.	बच्चो, है यह भारत देश	127
81.	बच्चो, तुम गुणवान बनो	129
82.	बोलो बच्चो, मीठे बोल	130
83.	प्यारे बच्चो, बनो विनीत	131
84.	प्यारे बच्चो, सीखो ज्ञान	132
85.	प्यारे बच्चो, करो न क्रोध	133
86.	सीखो आसन, प्राणायाम	134
87.	सीखो बच्चो, प्रेक्षाध्यान	135
88.	हो गया नूतन सवेरा	136
89.	अध्यात्म का आकाश	138
90.	कभी था उपवन में मधुमास	139
91.	कभी सिर पर थे काले केश	141
92.	कभी था सुन्दर यही शरीर	142
93.	यह जीवन एक कहानी है	144
94.	भिक्षुक का अभिनन्दन क्या ?	145
95.	संतो का कैसा स्वागत ?	146
96.	पानी बहता ही निर्मल है	148
97.	उस महापुरुष को नमस्कार	149
98.	हे दिव्य ज्योति, तुमको प्रणाम	150
99.	है फूल वही जो प्रभु चरणों में चढ़ता	152
100	काल की विचित्र गति	153

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

101. क्रूर काल 154
102. संथारा 155
103. कुछ व्यक्ति छोड़ जाते हैं 156
104. महापुरुष वे सदा अमर हैं 157

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

1. प्रणति-प्रशस्ति

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

1. यह संघ हमारा प्राणकोश

यह संघ हमारा प्राणकोश।।
मिलता इससे अध्यात्मपोष।
यह संघ हमारा प्राणकोश।।

एकाकी रहते जो साधक
अपनी आत्मा के आराधक
वे कठिन साधना करते हैं
अंतस् की कालिख हरते हैं
रह अप्रमत्त अनुपल अदोष।
यह संघ हमारा प्राणकोश।।

रहने के लिए निकेत नहीं
देते कोई संकेत नहीं
पथ में बिखरे हों तीक्ष्ण शूल
अथवा कोमल कमनीय फूल
है लक्ष्य एक ही कर्म-शोष।
यह संघ हमारा प्राणकोश।।

रह पक्ष मास तक निराहार
जंगल में ही करते विहार
गर्मी, सर्दी हो अननुमेय
वे किन्तु साधते सतत श्रेय
तप, जप ही जिनका आत्मतोष।
यह संघ हमारा प्राणकोश।।

उनका भी जन्मस्थान संघ
समुचित शिक्षण संस्थान संघ
जीवन का आनापान संघ
संरक्षक, वज्र-पिधान संघ
श्रुत, संयम का आधार ठोस।
यह संघ हमारा प्राणकोश।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

निर्ग्रन्थ संघ में जो रहता
प्रतिकूल प्रसंगों को सहता
वह असिधारा पर चलता है
बन दीपक निशिदिन जलता है
अनुशासन जिसका अमर घोष।
यह संघ हमारा प्राणकोश।।

जिसके कषाय हों क्षीणकाय
हो चुकी वासना मंद-प्राय
कोई भी मायाजाल नहीं
जो कलहरसिक, वाचाल नहीं
उसको ही देता संघ तोष।
यह संघ हमारा प्राणकोश।।

सिखलाता सद्व्यवहार संघ
स्खलनाओं का उपचार संघ
दिखलाता भव का पार संघ
है अनुपमेय उपहार संघ
दर्शन, चरित्र का वृहत् कोश।
यह संघ हमारा प्राणकोश।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

2. मर्यादा धरणी, मर्यादा अम्बर है

मर्यादा धरणी, मर्यादा अम्बर है।।
यह सत्यं-शिवं-सुन्दरं क्षेमंकर है।
मर्यादा धरणी, मर्यादा अम्बर है।।

जब तक रहता है नील गगन में तारा
तब तक छविमान दीखता लगता प्यारा
जब अपने उच्च स्थान से वह डिग जाता
पाषाण-पिण्ड बन कर पृथ्वी पर आता
कहलाता उल्कापात बहुत दुखकर है।
मर्यादा धरणी, मर्यादा अम्बर है।।

यदि कोई बात किसी पर थोपी जाती
वैज्ञानिक युग में वह बन्धन कहलाती
पर समझ-बूझ कर जो पथ अपनाता नर
उस पर चलना फिर हो कितना ही दुष्कर
स्वेच्छा से स्वीकृत मरना भी सुखकर है।
मर्यादा धरणी, मर्यादा अम्बर है।।

मर्यादा ही अम्बुधि के बने किनारे
मर्यादा पर ही स्थित हैं सूर्य, सितारे
मर्यादा ही संसृति की लक्ष्मण रेखा
इसका प्रभाव व्यवहार जगत में देखा
मर्यादा देती निर्भयता का वर है।
मर्यादा धरणी, मर्यादा अम्बर है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कातर, अधीर का किन्तु निवास नहीं यह
स्वेच्छाचारी का भी आवास नहीं यह
यह गति देती है मानवीय अंशों को
यह मति देती है सदा राजहंसों को
इसका आराधक होता अजर-अमर है।
मर्यादा धरणी, मर्यादा अम्बर है।।
यह सत्यं - शिवं - सुन्दरं क्षेमंकर है।
मर्यादा धरणी, मर्यादा अम्बर है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3. राजहंस, सर को मत छोड़ो

राजहंस, सर को मत छोड़ो।।
ताल-तलैया के जल से तुम
स्नेह-सूत्र अपना मत जोड़ो।
राजहंस, सर को मत छोड़ो।।

चाहे है तटबन्ध चिरन्तन
चाहे जल भी लगता खारा
अन्य कारणों से भी संभव
तुम्हें न लगता हो यह प्यारा
फिर भी इससे प्रीति न तोड़ो।
राजहंस, सर को मत छोड़ो।।

वर्तमान के आर-पार भी
सुहृद, सत्य का बहता सोता
भावुकतावश चरण उठाना
कभी नहीं श्रेयस्कर होता
द्वन्द्वमुक्त हो तत्त्व निचोड़ो।
राजहंस, सर को मत छोड़ो।।

ढोल दूर के ही सुहावने
युगों - युगों से लगते आये
पर्वत के लावण्यपुञ्ज ने
कितने कोमल प्राण लुभाये
अन्तर्मानस को झंझोड़ो।
राजहंस, सर को मत छोड़ो ।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पृथक्करण मोती–कंकर का
विश्वविदित पहचान तुम्हारी
नीर–क्षीर का सद्विवेक भी
परम्परागत शाण तुम्हारी
गरिमा–वल्ली को न मरोड़ो।
राजहंस, सर को मत छोड़ो।।

तुम शोभित हो पद्माकर से
वह भी तुमसे शोभित होता
क्षणिक आपदा से अकुला कर
धीर संतुलन कभी न खोता
वापिस अपना चिंतन मोड़ो।
राजहंस, सर को मत छोड़ो।।
ताल – तलैया के जल से तुम
स्नेह – सूत्र अपना मत जोड़ो।
राजहंस, सर को मत छोड़ो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. सिद्धार्थपुत्र, शत-शत प्रणाम

सिद्धार्थपुत्र, शत-शत प्रणाम।।
श्रद्धांजलि लो हे ज्योतिधाम,
सिद्धार्थपुत्र, शत-शत प्रणाम।।
हे पूर्णकाम, हे आप्तकाम,
सिद्धार्थपुत्र, शत-शत प्रणाम।।

मानव मानव को दास बना
जब उस पर शासन करता था
अपना दारुण निर्दय पंजा
उसकी छाती पर धरता था
मन के विपरीत अगर होता
लेता उसकी आंखें निकाल
सिर, हाथ-पांव का कर छेदन
पावक में देता उसे डाल
धरती - अम्बर भी कांप उठे
यह देख भंयकर, क्रूर काम।
सिद्धार्थपुत्र, शत - शत प्रणाम।।

था नाच रहा नंगा होकर
जब जातिवाद का भीष्म भूत
हो चुकी व्याप्त बन महारोग
गर्हित अमानुषिक छुआछूत
मार्जार, श्वान के शावक तो
रख लेते थे अभिजात साथ
पर नहीं लगा सकता उनकी
छाया पर कोई शूद्र हाथ
पशु को दुलार पर मानव को
तर्जना, ताड़ना थी प्रकाम।
सिद्धार्थपुत्र, शत - शत प्रणाम।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हा! धर्म नाम पर जलती थी
हिंसा की भीषणतम होली
यज्ञों में बलि की वस्तु बनी
पशुओं की निरपराध टोली
हो द्रवित प्रकृति रोती सुन कर
उनका अन्तर्वेधक विलाप
रवि लेता अपने मूंद नयन
यह देखा जाता नहीं पाप
दिल उठता कांप दर्शकों का
होती विभावरी व्यथित श्याम।
सिद्धार्थपुत्र, शत-शत प्रणाम।।

नारी यदि होगी निरक्षरा
तो साध सकेगा स्वार्थ पुरुष
उसके पढ़ने-लिखने पर भी
पटुता से लगा दिया अंकुश
शिशु-पालन और प्रसव का ही
था अन्तरंग अधिकार उसे
कर क्रय-विक्रय बाजारों में
देते थे व्यथा अपार उसे
उसकी प्रतिभाओं पर प्रहार
जन करते थे निर्भय, निकाम।
सिद्धार्थपुत्र, शत-शत प्रणाम।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुम नई चेतना, नई किरण
नूतन प्रकाश ले आए थे
बुझते मानवता के प्रदीप
तुमने ही देव जलाए थे
हे दीनबन्धु ! हे दयासिन्धु!
उपकृत तुमसे संसार हुआ
करुणा के सूखे सुमनों में
फिर सौरभ का संचार हुआ
युग के अनन्त अभिवन्दन लो
हे सफलकाम ! हे सत्यकाम !
सिद्धार्थपुत्र, शत-शत प्रणाम।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

5. ज्योतिर्धाम, तुम्हें प्रणाम

त्रिशलानंद,
ज्योति अमंद
तुमने पाई
हमें दिखाई
जो अक्षीण
सदा नवीन
इसीलिए है शत-शत वन्दन।
इसीलिए है शत-शत वन्दन।।

हो अज्ञेय
पर श्रद्धेय
क्रान्तदृष्टि से
अमृतवृष्टि से
कर निष्पाप
हर संताप
मिटा दिया धरती का क्रन्दन।
इसीलिए है शत-शत वन्दन।।

मार्ग पुनीत
था निर्णीत
चले अनवरत
बन कर संयत
वैभव त्याग
जीता राग
जन्मान्तर के तोड़े बन्धन।
इसीलिए है शत-शत वन्दन।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरा नाम
हो निष्काम
जो लेता है
खो देता है
संचित पंक
हो नि:शंक
बन जाता वह शीतल चन्दन।
इसीलिए है शत-शत वन्दन।।

श्लाध्य चरित्र
परम पवित्र
महामनस्वी
उग्र तपस्वी
ज्योतिर्धाम
तुम्हें प्रणाम
करता प्राणों का हर स्पन्दन।
इसीलिए है शत-शत वन्दन।।

कष्ट विभिन्न
सहे अखिन्न
हारे नर, सुर
पिशाच, निष्ठुर
अंतर्लीन
हो स्वाधीन
निखर गए तप कर ज्यों कुन्दन।
इसीलिए है शत-शत वन्दन।।

छोड़ प्रमाद
हर्ष- विषाद
इन्द्रिय-निग्रह
कठिन-अभिग्रह
कर स्वीकार
किया विहार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पहुँच गया मंजिल तक स्यन्दन।
इसीलिए है शत-शत वन्दन।।
सुन प्रतिबोध
सरस सुबोध
जन-वाणी में
हर प्राणी में
जागी प्रीति
अतुल प्रतीति
करने लगा विश्व अभिनन्दन।
इसीलिए है शत-शत वन्दन।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6. मैं हूँ दीप, दिवाकर तुम हो

मैं हूँ दीप, दिवाकर तुम हो।।

पथ से मंजिल भिन्न नहीं है
अथ इति से विच्छिन्न नहीं है
लघु विराट का एक रूप है
मैं पद-धूलि, धराधर तुम हो।
मैं हूँ दीप, दिवाकर तुम हो।।

ज्ञान तुम्हारा अननुमेय है
मेरा सीमित, स्वल्प, मेय है
मात्रा का केवल अन्तर है
मैं चिनगी, वैश्वानर तुम हो।
मैं हूँ दीप, दिवाकर तुम हो।।

कर ली तुमने पूर्ण प्रगति है
उसी पंथ पर मेरी गति है
चलने का संकल्प लिए हूँ
मैं सरिता, रत्नाकर तुम हो।
मैं हूँ दीप, दिवाकर तुम हो।।

है अखण्ड आलोक तुम्हारा
मैं प्रकाश की पतली धारा
अणु से पूर्ण बना करता है
मैं कृश कला, कलाधर तुम हो।
मैं हूँ दीप, दिवाकर तुम हो।।

सूक्ष्म बीज में वृक्ष निहित है
नर में नारायण निश्चित है
भेद अंश अंशी में है क्या ?
मैं जलकण, धाराधर तुम हो।
मैं हूँ दीप, दिवाकर तुम हो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7. जब तुम धरती पर आए थे

जागृति का नव संदेश लिए
जब तुम धरती पर आए थे।।
नभ ने भी अपने प्रांगण में
तब दीप असंख्य जलाए थे।
जागृति का नव संदेश लिए
जब तुम धरती पर आए थे।।

देवों ने रच कर गीत मधुर
समवेतस्वर संगान किया
हर्षातिरेक में परियों ने
किन्नरियों को आह्वान किया
नक्षत्र-निलय से ज्योति नई
भूतल की ओर बिखरती थी
अनुपम अनन्त सौन्दर्य लिए
रजनी की छटा निखरती थी
मंगल ध्वनि हुई दिशाओं में
तरुओं ने शंख बजाए थे।
जागृति का नव संदेश लिए
जब तुम धरती पर आए थे।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कण–कण निसर्ग का बोल उठा
आओ, आओ हे तपःपूत,
हम पलक बिछाए बैठे हैं
हे सत्यक्रान्ति के अग्रदूत,
संतप्त विश्व पर घन बन कर
बरसो हे भारत के सपूत
वाणी–विलास बन गया धर्म
पर है जीवन में अननुभूत
करुणार्द्र हृदय से तब तुमने
पीयूष – बिन्दु बरसाए थे
जागृति का नव संदेश लिए
जब तुम धरती पर आए थे।
नभ ने भी अपने प्रांगण में
तब दीप असंख्य जलाए थे।।

भगवान महावीर के प्रति श्रद्धांजलि

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

8. गुरु बिना मिले भगवान नहीं

गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।
संभव अंतर - संधान नहीं।
गुरु-दृष्टि जहां, कल्याण वहीं।
गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।

पढ़ कर ही गुरु का महामंत्र
करते है तान्त्रिक सिद्ध तंत्र
लेते ही गुरु का पुण्य नाम
हो जाते हैं वे सफलकाम
टिकता कोई व्यवधान नहीं।
गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।

गुरु नील गगन से निर्मल हैं
इस धरती के तीर्थस्थल हैं
गुरु पतितों को पावन करते
उनमें सद्गुण-सौरभ भरते
जिसका संभव प्रतिदान नहीं।
गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।

गुरु में सुमेरु की ऊँचाई
गुरु में सागर की गहराई
गुरु मरुधर में गंगाजल हैं
गुरु जंगल में भी मंगल हैं
लेकिन सबको पहचान नहीं।
गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरु सूरज–चांद सितारे हैं
सुर–नर–असुरों के प्यारे हैं
गुरु की मनमोहक माया है
गुरु कल्पवृक्ष की छाया है
ये भी यथेष्ट प्रतिमान नहीं।
गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।

गुरु ही आगम, गुरु ही पुराण
गुरु का पिटकों में प्रथम स्थान
भगवान अगोचर हैं अगम्य
गुरु ही हैं उनका रूप रम्य
गुरु से बहुमूल्य निधान नहीं।
गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।

जितने भी आविष्कार हुए
गुरु ही उनके आधार हुए
जो हुई, हो रही सत्य शोध
गुरु से ही उसका मिला बोध
दे सकते शब्द प्रमाण नहीं।
गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।

मझधारों में गुरु का प्रभाव
प्रस्तुत कर देता भव्य नाव
गुरु की छवि आंखों में उतार
हो जाते हैं भव–सिंधु पार
गुरु –गौरव का अनुमान नहीं।
गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरु की महिमा है अननुमेय
गुरु दिव्य चक्षु, श्रद्धेय, ध्येय
गुरु नाम महौषधि वह महान
जो मृत को देती प्राणदान
गुरु से न बड़ा विज्ञान कहीं।
गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।
संभव अंतर- संधान नहीं।
गुरु बिना मिले भगवान नहीं।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

9. नमन है देवों के भी देव

तुम्हारी आंखों में आकाश
गिरा में सरस्वती का वास
जिधर तुम कर देते संकेत
उधर मुड़ जाता दिव्य उजास।

जहां पर टिके तुम्हारे पांव
वहां सुरतरु ने कर दी छांव
नहीं कर सकते उसको क्षीण
पिशाचों, प्रेतों के भी दांव।

हुई कृतपुण्य धरित्री आप
लगा मिटने युग का संताप
साधुता स्वयं धन्य, कृतकाम
तुम्हारी सुनते ही पदचाप।

अलौकिक प्रतिभा-प्रभा निहार
चकित रह गया सकल संसार
श्रवण करते न अघाते कान
अतीन्द्रियज्ञानी तुल्य विचार।

लिखा जो तुमने भव्य विधान
संघ के लिए बना वरदान
संगठन की है अपनी छाप
विलक्षण अनुशासन -विज्ञान।

त्रिपथगा से पावन गुरुदेव,
मरुस्थल में सावन गुरुदेव,
चरण - कमलों में श्रद्धासिक्त
नमन है देवों के भी देव।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

10. तपःपूत चरणों में वन्दन

तपःपूत चरणों में वन्दन।।
चिर सुषुप्ति से जाग उठे मन।
तपः पूत चरणों में वन्दन।।
हों पुनीत जीवन के क्षण-क्षण।
तपःपूत चरणों में वन्दन।।

थे तुम ऐसी दीपशिखा प्रभु
जिसकी लौ न प्रकम्पित होती
जो न धूम्रछाया से धूमिल,
क्षीण, विवर्ण, कलंकित होती
हों ज्योतिर्मय मेरे कण-कण।
तपःपूत चरणों में वन्दन।।

चले जिधर युग चरण तम्हारे
आज राजपथ वह कहलाता
शूलें जहां तुम्हें मिलती थी
आज वहां उपवन लहराता
महक रहा सुमनों से प्रांगण।
तपःपूत चरणों में वन्दन।।

गाए गीत अनन्त तुम्हारे
फिर भी तुम अज्ञेय रहे हो
सहज साधनासिक्त हृदय था
इसीलिए श्रद्धेय रहे हो
आत्मजयी, युगपुरुष चिरन्तन।
तपःपूत चरणों में वन्दन।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मूक पड़ी है मन की वीणा
तुम आ कर इसमें स्वर भर दो
अस्त-व्यस्त निष्क्रिय तारों को
एक बार फिर झंकृत कर दो
हो निष्प्राण नसों में स्पन्दन।
तपःपूत चरणों में वन्दन।।
चिर सुषुप्ति से जाग उठे मन।
तपःपूत चरणों में वन्दन।।

आचार्य भिक्षु के प्रति

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

11.अभिनन्दन है, अभिनन्दन है

अभिनन्दन है, अभिनन्दन है।।

सौहार्द, शांति के निर्झर का
अर्जित आलोक परात्पर का
अविकल, अविनाशी पुष्कर का
अभिनन्दन है, अभिनन्दन है।।

युग के विषपायी शंकर का
संघर्ष- निरत क्षेमंकर का
निस्सीम, अनश्वर अंबर का
अभिनन्दन है, अभिनन्दन है।।

राका के शीतल शशधर का
अतलस्पर्शी रत्नाकर का
नयनाभिराम कुसुमाकर का
अभिनन्दन है, अभिनन्दन है।।

प्राची में प्रकटित ऊषा का
मध्याह्नकाल के पूषा का
गुण-रत्न भरित मंजूषा का
अभिनन्दन है, अभिनन्दन है।।

धरणी-अम्बर के गौरव का
संसृति के अतिशय सौष्ठव का
अप्रतिम, अनाविल वैभव का
अभिनन्दन है, अभिनन्दन है।।

आचार्य भिक्षु के प्रति

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

12. वीर भिक्षु अभिवंदन शत-शत

वीर भिक्षु अभिवंदन शत-शत।।
क्रांतिदूत, अवधूत चिरंतन
अभिनंदन करते श्रद्धानत।
वीर भिक्षु अभिवंदन शत-शत।।

दिव्य गगन के दिव्य दिवाकर
अमा-तमा के अमल सुधाकर
ज्योतिपुञ्ज निष्कम्प, अलौकिक
धन्य नखत ये तुमको पाकर
बहुत कठिन है अतिमानव का
सीमित जड़ शब्दों में स्वागत।
वीर भिक्षु अभिवंदन शत-शत।।

लक्ष्य समुज्ज्वल, पावन, उत्तम
जीवन-क्रम भी था सुन्दरतम
त्याग महत्त्वाकांक्षाओं को
साधा सतत अनुत्तर संयम
जड़ से शिथिलाचार उखाड़ा
किया साधना पादप उन्नत।
वीर भिक्षु अभिवंदन शत-शत।।

सिद्धांतों का सूक्ष्म विवेचन
गलत धारणाओं का रेचन
कटुकौषधि दी ऐसी, जिससे
कुरूढ़ियों का हुआ विरेचन
स्वस्थ, सुघड़ श्रेयस्कर पथ पर-
हम भी बढ़ते जाएं संतत।
वीर भिक्षु अभिवंदन शत - शत।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

13. दीप जो तुमने जलाया

दीप जो तुमने जलाया वह सदा जलता रहेगा।।
बाग जो तुमने लगाया वह सदा फलता रहेगा।
दीप जो तुमने जलाया वह सदा जलता रहेगा।।

दृष्टिगोचर हो न अब तुम यह क्षणिक अवसाद-सा है
शून्यता का, रिक्तता का मिल रहा संवाद-सा है
पर तुम्हारे कार्य सारे हर दिशा में बोलते हैं
शून्यता में, रिक्तता में वे मधुरिमा घोलते हैं

मार्ग - दर्शन चरणचिह्नों से सदा मिलता रहेगा।
दीप जो तुमने जलाया वह सदा जलता रहेगा।।

मर्त्य कोई भी जगत में अमर रह पाता नहीं है
जो चला जाता, पुनः उस रूप में आता नहीं है
युग-पटल पर मात्र उस का नाम अंकित हो सका है
दूसरों को पथ दिखाने जो स्वयं को खो सका है

अप्रतिम इतिवृत्त उसका सहज ही चलता रहेगा।
दीप जो तुमने जलाया वह सदा जलता रहेगा।।

विरोधों की घोर आंधी जिसे विचलित कर न पाती
जो डटे संघर्ष के क्षण में बना कर वज्र छाती
सतत समता- स्नात रह कर संघ का गौरव बढ़ाता
और गण की वेदिका पर अर्घ्य प्राणों का चढ़ाता

हर सुधी उस सुघड़ सांचे में सदा ढलता रहेगा।
दीप जो तुमने जलाया वह सदा जलता रहेगा।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भूल ही जिसको न सकते आज उसका स्मरण कैसा ?
ग्रंथ ही कर्तृत्व जिसका फिर कहीं उद्धरण कैसा ?
वंदना की हर विधा व्यवहार या उपचार ही है
व्यक्त कर दे भाव, शब्दों का कहां भण्डार ही है

हृदय में जो बस गया वह हृदय में पलता रहेगा।
दीप जो तुमने ज लाया वह सदा जलता रहेगा।।

आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धांजलि

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

14. कर दिया सब कुछ समर्पण

कर दिया सब कुछ समर्पण
चरण कमलों में प्रभो,
पास में मेरे न कुछ भी
आपके लायक विभो ?

कल्पना के लोक में भी
अगर मन विचरण करे
आप तो हैं कविवरों की
कल्पना से भी परे

मूक मन के भाव सारे
मूक मेरी भारती
हृदय-मन्दिर में निरन्तर
कर रही हूँ आरती

क्या कभी आराध्य की स्तुति
हो सकी है बोल कर ?
मेरु का कब मोल होता
है तुला से तोल कर ?

खिले अन्तःकरण में
सुरभित सुमन सद्भाव के
ज्ञात यह भगवान भूखे
हैं विनय के, भाव के

इसलिए शुभ भावनाओं
का प्रभो, उपहार लो
भक्तिभावित चेतना प्रस्तुत-
इसे स्वीकार लो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

15. समर्पण है क्या इसका नाम ?

समर्पण होता इसका नाम।।
सहज हो निर्हेतुक निष्काम।
समर्पण होता इसका नाम।।

देख कर मझधारों में नाव
चलित हो जाते सहसा भाव
पकड़ लेते हैं कर पतवार
ढूंढ़ने लग जाते आधार
धैर्य पर लगता चिह्न विराम।
समर्पण है क्या इसका नाम ?

जहां अपना कोई न विचार
न चिन्तन का मस्तक पर भार
इष्ट के इंगित के अनुसार
समूचा चलता है व्यापार
सिन्धु में हो ज्यों सरित अनाम।
समर्पण होता इसका नाम।।

मनुज यदि अपनी चिंता छोड़
तार लेता है प्रभु से जोड़
सहायक बनते ग्रह -नक्षत्र
तानते रवि-शशि उस पर छत्र
प्रकृति रहती प्रसन्न हर याम।
समर्पण होता इसका नाम।।

राजगिरि के बाहर उद्यान
पधारे महावीर भगवान
मार्ग में अर्जुन का आतंक
अतः जा सके न राजा-रंक
जिन्हें था प्रिय जीवन, धन-धाम।
समर्पण है क्या इसका नाम ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

छोड़ कर प्राणों का भी मोह
न मन में राग, न कोई द्रोह
हृदय में लिए अटल आश्वास
सुदर्शन चला वीर के पास
लगा लोगों को विधि है वाम।
समर्पण है पर इसका नाम।।

उठा कर मुद्गर बारम्बार
चाहता करना क्रूर प्रहार
चले अर्जुन के किन्तु न हाथ
यक्ष ने छोड़ दिया था साथ
क्षीण, अवरुद्ध गात्र का स्थाम।
समर्पण होता इसका नाम।।

सुदर्शन क्योंकि ध्यान में लीन
कमल-चरणों में था आसीन
मृत्यु से अतः नहीं भयभीत
समर्पित था जीवन-संगीत
उपद्रव स्वतः शान्त उद्दाम।
समर्पण होता इसका नाम।।

राधिका से करते संवाद
आ रहा था भोजन में स्वाद
चल पड़े कृष्ण छोड़ कर थाल
द्वार से मुड़े किन्तु तत्काल
सभी को विस्मय हुआ प्रकाम।
समर्पण है क्या इसका नाम ?

राधिका ने पूछा स्वयमेव
अचानक गए, आ गए देव
नहीं था अगर वहां कुछ कार्य
उठाया कष्ट व्यर्थ क्यों आर्य?
कुतूहल यह कैसा अभिराम ?
समर्पण होता इसका नाम।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भक्त पर था संकट घनघोर
दिखाई दिया न कोई छोर
नाम ले मेरा बारम्बार
दीनतापूर्वक रहा पुकार
सँभालें शीघ्र मुझे घनश्याम।
समर्पण होता इसका नाम।।
पत्थरों की सह सका न मार
गया जपते-जपते भी हार
इष्ट के प्रति विचलित विश्वास
किया बचने का स्वयं प्रयास
रहा अब मेरा वहां न काम।
समर्पण है क्या इसका नाम ?
जहां रहता अपना न शरीर
न सोना, उठना, रोटी, नीर
न अपना मन, इन्द्रिय या प्राण
भक्ति हो अविच्छिन्न अनिदान
स्थान प्रभु का है वही ललाम।
समर्पण होता इसका नाम।।
सहज हो निर्हेतुक निष्काम।
समर्पण होता इसका नाम।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

16. ज्योतिपुरुष की जय-जयकार

ज्योतिपुरुष की जय - जयकार।।
जय - जयकार, जय - जयकार
बोल उठा सारा संसार।
ज्योतिपुरुष की जय - जयकार।।

बच्चों की किलकारी बोली
काश्मीर की क्यारी बोली
फूलों की फुलवारी बोली
भाषा न्यारी - न्यारी बोली
कर सत्कार, जय - जयकार।
ज्योतिपुरुष की जय - जयकार।।

महामेघ रुक-रुक कर बोला
दिङ्मण्डल झुक-झुक कर बोला
स्निग्ध पवन कौतुक कर बोला
विद्युत घन में लुक कर बोला
भर हुंकार, जय - जयकार।
ज्योतिपुरुष की जय - जयकार।।

धरती बोली, अम्बर बोला
सरिता बोली, सागर बोला
लहरें बोली, निर्झर बोला
नहरें बोली, भूधर बोला
चरण पखार, जय - जयकार।
ज्योतिपुरुष की जय - जयकार।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दीपक जला दिवाली बोली
सावन की हरियाली बोली
हर तरु की हर डाली बोली
कोयल हो मतवाली बोली
स्वर संचार, जय - जयकार।
ज्योतिपुरुष की जय - जयकार।।

संध्या की अरुणाई बोली
रजनी की तरुणाई बोली
तारों की परछाई बोली
ऊषा ले अँगड़ाई बोली
बारम्बार, जय - जयकार।
ज्योतिपुरुष की जय - जयकार।।

सूर्य - चन्द्र मुस्काते बोले
मंगल - बुध गुण गाते बोले
सुराचार्य हर्षाते बोले
कवि - शनि मोद मनाते बोले
रश्मि प्रसार, जय - जयकार।
ज्योतिपुरुष की जय - जयकार।।

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के अमृत-महोत्सव के अवसर पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

17. राष्ट्रसंत को पुण्य प्रणाम

राष्ट्रसंत को पुण्य प्रणाम।।
जिसके पौरुष से संरक्षित
मानवता की छवि अभिराम।
राष्ट्रसंत को पुण्य प्रणाम।।

जिसने अग-जग को दिखलाया
ऐसा होता भारतवर्ष
स्वयं प्रयोक्ता बन सिखलाया
त्याग - तपस्या का उत्कर्ष
जिसने रज को रजत बनाया
कमल-पगों का देकर स्पर्श
जिसने महामेघ बरसाया
मरुमंडल में भी आकर्ष
प्रज्ञाबल से किए प्रगति के
उद्घाटित अगणित आयाम।
राष्ट्रसंत को पुण्य प्रणाम।।

पीड़ित की पीड़ा सहलाई
जा कर जिसने घर-घर द्वार
दिग्मूढ़ों को दिशा दिखाई
कर - कर संतत पादविहार
मोड़-मोड़ पर ज्योति जलाई
स्नेहदान कर बारम्बार
जग की सोई शक्ति जगाई
परिवर्तित कर चिर संस्कार
जनमानस पर हुआ विराजित
ऊर्जस्वल व्यक्तित्व ललाम।
राष्ट्रसंत को पुण्य प्रणाम।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जिसका आध्यात्मिक बल–विक्रम
छोड़ रहा भूतल पर छाप
जिसका अनुशासन, श्रम, संयम
मिटा रहा जगती का ताप
जिसका सत्यनिष्ठ जीवन – क्रम
निर्मल, निश्छल, शुचि, निष्पाप
जिसका श्रुत अतिशायी उत्तम
देता है आलोक अमाप
उस दिव्यात्मा श्रीतुलसी को
श्रद्धासिक्त प्रणति निष्काम।
राष्ट्रसंत को पुण्य प्रणाम।।

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के अमृत महोत्सव के अवसर पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

18. तुम ज्योति बांटने आए हो.....

हे ज्योतिपुरुष, ले दिव्य ज्योति निज कर में
तुम ज्योति बांटने आए हो घर - घर में।।

तुमने जिस तप्त हृदय की ओर निहारा
उसको मिल गई स्निग्ध शामक जलधारा
जिस भू पर अपने पावन चरण टिकाए
उन पदचिह्नों पर कल्पवृक्ष लहराए
सुर-असुर बोलते जय अवनी-अम्बर में।
तुम ज्योति बांटने आए हो घर-घर में।।

जो फूल उगाए हैं तुमने वनमाली,
उनकी सौरभ, शोभा है बहुत निराली
दिग्-दिगन्त के मधुकर उन पर मँडराते
पीते पराग, छवि देख चकित रह जाते
गौरव - गाथाएं गाते दुनिया भर में।
तुम ज्योति बांटने आए हो घर-घर में।।

जब जहां कहीं पर भी अन्धेरा पाया
तब तुमने जा कर दीपक वहीं जलाया
तीखी शूलों को फूलों में बदला है
युग का कल्मष धो, किया उसे उजला है
फूंके हैं दसों प्राण अनघड़ पत्थर में।
तुम ज्योति बांटने आए हो घर-घर में।।

तीर्थंकर मान चुका है तुम्हें जमाना
सचमुच पहचान चुका है तुम्हें जमाना
इसने जीवन की कला तुम्हीं से सीखी
पद्धति पाई है प्रेक्षाध्यान सरीखी
इसलिए थिरकते छंद स्वयं मृदु स्वर में।
तुम ज्योति बांटने आए हो घर-घर में।।

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के अमृत महोत्सव के अवसर पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

19. अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी

अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी।।
इतना अमृत दिया है युग को
जितना घन ने दिया न पानी।
अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी।।

भारत–यह देवों का प्यारा
ऋषि, मुनियों ने इसे सँवारा
संस्कृति इसकी त्यागमयी थी
उज्ज्वल, पावन कालजयी थी
संत अहिंसक थे सेनानी।
अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी।।

नहीं लगाया जाता ताला
मानव मानव का रखवाला
एक दुखी तो सभी दुखी थे
एक सुखी तो सभी सुखी थे
परम्परा यह रही पुरानी।
अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी।।

चला कुचक्र काल का ऐसा
गौरव रहा न पहले जैसा
रिश्वत, शोषण उत्पीड़न की
हत्या, भ्रष्टाचार, दमन की –
लम्बी होने लगी कहानी।
अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी।।

कलह सर्पिणी बन कर आई
लगे झगड़ने भाई – भाई
प्रेम – प्रीति संबंध पुरातन
शनैः शनैः सबका अवमूल्यन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बढ़ी परस्पर खींचातानी।
अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी।।

सत्य, अहिंसा, विनय उपेक्षित
मानवता मृत – प्राय अनाश्रित
मोड़ी अणुव्रतों के द्वारा
अमृतपुरुष ने वह युगधारा
मान रहा यह जग विज्ञानी।
अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी।।

सागर मथ कर ढूंढ़ निकाली
निरुपम प्रेक्षाध्यान प्रणाली
दिव्य जड़ी या सुधास्राव है
मिट जाता जिससे तनाव है
सहज सन्तुलित बनता प्राणी।
अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी।।

इतना अमृत दिया है युग को
जितना घन ने दिया न पानी।
अमृतपुरुष हैं अवढ़रदानी।।

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के अमृत महोत्सव के अवसर पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

20. वंदन श्रुत-सम्राट

वंदन श्रुत - सम्राट[1]।।
अतिशय गात्र-सम्पदाधारी
अनुकृति संसृति में न निहारी
चुम्बकत्व नेत्रों में भारी
तेजोदीप्त ललाट।
वंदन श्रुत-सम्राट।।

कालिदास की काव्य कुशलता
जयगणि की साहित्य विरलता
हेमचन्द्र की बुद्धि विमलता।
वाचस्पति का ठाट।
वंदन श्रुत-सम्राट।।

आगम - वारिधि का अवगाहन
उतर अतल में किया निमज्जन
बने स्वयं तीर्थस्थल पावन
ज्यों गंगा का घाट।
वंदन श्रुत-सम्राट।।

युगपत् आध्यात्मिक वैज्ञानिक
जीवन - शैली है प्रायोगिक
किन्तु केन्द्र में लक्ष्य अलौकिक
आत्मोत्कर्ष विराट।
वंदन श्रुत-सम्राट।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अभिनव सप्त सकार[2] योजना
संघ पुरुष की भव्य कल्पना
अश्रुत प्रज्ञापर्व – साधना
किंचित नहीं उचाट।
वंदन श्रुत – सम्राट।।

---

1. वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी

2. जैन विश्व भारती की स्थापना का उद्देश्य था – शिक्षा, साधना, शोध, साहित्य, सेवा, संस्कृति और समन्वय का विकास।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

21. प्रज्ञापर्व : अमर अवदान

आगमों की वाचना है
उल्लिखित इतिहास में।
हो रही आवृत्ति उसकी
आज गुरुकुलवास में।।

सींचते श्रम - सीकरों से
संघ को आचार्य हैं।
बाद सदियों के कभी
होते विलक्षण कार्य हैं।।

खुल रही अध्यात्म - अनुप्राणित
दिशाएं नित नई।
चेतना की धुल रही
परतें सघन, कलुषित कई।।

भाग्य - लिपि गण की सुनहरी
लिख रहे आचार्य हैं।
बाद सदियों के कभी
होते विलक्षण कार्य हैं।।

देते हैं गुरुदेव प्रशिक्षण
बदले जीवन की धारा।
शास्त्रों का आधार
निरीक्षण अपना अपने ही द्वारा।।

साधु-साध्वियों के अंतस् की
छवि मिल जाए दिनकर से।
निर्मलता, शीतलता, उज्ज्वलता
तुल जाए हिमकर से।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विश्व भारती के प्रांगण में
स्वर्ग उतर कर आया है।
युवाचार्य - आचार्यप्रवर की
पारिजात - सी छाया है।।

धन्य - धन्य कृतपुण्य हो रहा
सभा सुधर्मा का परिसर।
शहर लाडनूं में आयोजित
योगक्षेम - वर्ष रुचिकर।।

प्रज्ञापर्व मनाने का
अश्रुत, अपूर्व संयोग मिला।
तुलसी के चिन्तन को
महाप्रज्ञ - प्रज्ञा का योग मिला।।

प्रवचन की शैली में मिलता
तीर्थंकर का परिचय है।
चित्रलिखित परिषद
वाणी में क्षीरास्रव-सा अतिशय है।।

युग की जटिल समस्याओं का
समाधान है प्रेक्षाध्यान।
मूल्यपरक शिक्षापद्धति का
कीर्तिमान जीवन - विज्ञान।।

हर पल का मूल्यांकन
चलता बहुआयामी अनुसंधान।
तुलसी का कर्तृत्व स्वयंभू
प्रज्ञापर्व अमर अवदान।।

परिकल्पना अनुत्तर
उससे भी बढ़ कर योजना बनी।
क्रियान्वयन में संघ नियोजित
शक्ति कर रहा है अपनी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शिक्षा से भी अधिक अपेक्षित
है संस्कारों का शोधन।
शम, संयम, आवेग-नियंत्रण,
ऊर्जा का ऊर्ध्वारोहण

महापर्व की पृष्ठभूमि का
श्रेय महाश्रमणी को है।
श्रुत - सम्पन्न बने समाज
यह प्रेय महाश्रमणी को है।।

करुणानिधि की करुणा का
यह अनुपमेय उपहार मिला।
गण - गौरव को गगनस्पर्शी
बनने का आधार मिला।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

22. एक ही वह नाम तुलसी

विश्व का विश्राम था जो
हर हृदय का राम था जो
निष्कलुष निष्काम था जो
अतुल आस्था – धाम था जो
एक ही वह नाम – तुलसी।
एक ही वह नाम – तुलसी।।

सृष्टि का शृंगार था जो
अवनि का उपहार था जो
भव्य युग–आधार था जो
ओज का भण्डार था जो
एक ही वह नाम –तुलसी।
एक ही वह नाम – तुलसी।।

कोटि जन का श्वास था जो
दूर से भी पास था जो
शक्ति था, विश्वास था जो
सुनहला, इतिहास था जो
एक ही वह नाम–तुलसी।
एक ही वह नाम–तुलसी।।

देखने जिसको तरसती
विवश ये आंखें बरसती
मात्र स्मृति का विषय अब जो
बस हृदय में मूर्ति बसती
एक ही वह नाम – तुलसी।
एक ही वह नाम – तुलसी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

23. दो नयन क्या फिरे

दो नयन क्या फिरे
असंख्य नेत्र ढल पड़े।।
विरह-व्यथा से घिरे सभी सन्न से खड़े।
दो नयन क्या फिरे असंख्य नेत्र ढल पड़े।।

दिग्वलय उदास है
नभ हुआ हताश है
कल्पबेल पर ढुले सैंकड़ों जल घड़े।
दो नयन क्या फिरे असंख्य नेत्र ढल पड़े।।

सिन्धु निस्तरंग है
पवन गत-उमंग है
एक दिल क्या जमा, असंख्य दिल पिघल पड़े।
दो नयन क्या फिरे असंख्य नेत्र ढल पड़े।।

सृष्टि के सुहाग के
प्रकृति के पराग के
दो चरण क्या थमे असंख्य पग चल पड़े।
दो नयन क्या फिरे असंख्य नेत्र ढल पड़े।।

नृलोक का ध्वज झुका
दिनेश का रथ रुका
'स्वागतम्' घोष कर नखत-गण उछल पड़े।
दो नयन क्या फिरे असंख्य नेत्र ढल पड़े।।
काल के करालपाश
क्यों तुझे हुआ न त्रास ?
प्राण एक के हरे, असंख्य के निकल पड़े।
दो नयन क्या फिरे असंख्य नेत्र ढल पड़े।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महकता अनिश रहा
फुल्ल अहर्निश रहा
एक फूल क्या छिना असंख्य सुम जल पड़े
दो नयन क्या फिरे असंख्य नेत्र ढल पड़े।।

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

24. संघ जब उदास था[1]

संघ जब उदास था
विरह से हताश था
महाप्रज्ञ ने दिया
अयाचित प्रकाश था

आकस्मिक घोषणा
सुन निरस्त वेदना
टूट मूर्च्छना गई
विहँस उठी चेतना

युवाचार्य का वरण
मुनि मुदित महाश्रमण
नाम सुन सुहावना
प्रसन्न वातावरण

उल्लसित हर हृदय
नव प्रभात का उदय
गूंज उठे नभ धरा
कण्ठ-कण्ठ घोष जय

शुभ भविष्य सामने
वचन ये लुभावने
पूज्यप्रवर[2] ने कहे
सचित्र अब वे बने

---

1. आचार्य श्री तुलसी के महाप्रयाण के बाद
2. आचार्य श्री तुलसी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

25. तुम हमारे, हम तुम्हारे

तुम हमारे, हम तुम्हारे
जा बसे क्यों उस किनारे ?
तुम हमारे .....
कोटि आंखें पथ निहारे
जा बसे क्यों .....

आर्यपद तुमसे अलंकृत, साधुता थी स्वयं शोभित
विश्व पट पर कर रहे थे आर्हती वाणी प्रतिष्ठित

अनवरत पुरुषार्थ से
साकार स्वर्णिम स्वप्न सारे ।
तुम हमारे .....

उमड़ता था अमल अन्त:करण में वात्सल्य सागर
मधुर मलयज महक से था मेदिनी का मुग्ध प्रान्तर

पारदर्शी दीप्ति से
अभिभूत सूरज-शशि-सितारे ।
तुम हमारे .....

मेघ नि:स्वन गान से दिग्-दिगन्तर अविरल तरंगित
हर शिलोच्चय के शिखर पर अपार्थिव पदचिह्न अंकित

विश्व नूतन नया मानव
चित्र आकर्षक उभारे।
तुम हमारे .....

व्यक्ति श्रद्धास्पद वही जो अमा को पूनम बनाए
कर स्वयं विषपान प्रतिफल में सुधा निर्झर बहाए

कल्पतरु ज्यों शीत आतप-
से जगत को जो उबारे।
तुम हमारे .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कर गए तुम भाल गण का हिमालय से भी समुन्नत
धर गए तुम चिरप्रकाशी दीप देहली का अणुव्रत

जन्म की पावन सदी पर
गूंजते जयघोष प्यारे।
तुम हमारे .....

---

1. आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

26. अभिनन्दन

आज करें किसका अभिनन्दन ?

एक ओर वह कलाकार है
जिसने कृति का रूप सँवारा
अपने श्रम से, अपने क्रम से
उसका अन्तर्बाह्य निखारा,
किस मानक से हो मूल्यांकन ?
आज करें किसका अभिनन्दन ?

करुणा की महनीय मूर्ति-सी
अनुपमेय कृति अपर ओर है
जिसे देख कर अमरों के भी
अंतस् में उठती हिलोर है
झुक-झुक कर करते अभिवन्दन ।
आज करें किसका अभिनन्दन ?

अमर रहें आचार्य हमारे
युवाचार्य नयनों के तारे
हर धड़कन से निकल रहे स्वर
स्वयं सफलता पांव पखारे
रहे प्रफुल्लित गण-वन-नन्दन।
आज करें किसका अभिनन्दन ?

मुनि नथमलजी 'महाप्रज्ञ' के युवाचार्य पद पर मनोनयन के अवसर पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

27. महाप्रज्ञ के जन्म-दिवस पर

महाप्रज्ञ के जन्म - दिवस पर
मुखर हो रहे श्रद्धा के स्वर।
नई अरुणिमा नव प्रकाश से
स्वागत करता प्रमुदित दिनकर।
महाप्रज्ञ के जन्म - दिवस पर
मुखर हो रहे श्रद्धा के स्वर।।

दुबले तन में प्रबल मनोबल
शास्ता होकर हृदय सुकोमल
शीतल, शांत, सौम्य मुद्रा में
विलसित गहराई सागरवर।
महाप्रज्ञ के जन्म - दिवस पर
मुखर हो रहे श्रद्धा के स्वर।।

छत्र-छांह में संघ निरामय
अष्ट सम्पदाएं स्फुट अतिशय
देख छटा कर पाना मुश्किल
तुलसी महाप्रज्ञ में अन्तर।
महाप्रज्ञ के जन्म -दिवस पर
मुखर हो रहे श्रद्धा के स्वर।।

चिरजीवी हों बालूनन्दन
नई सदी पाए संजीवन
आध्यात्मिक स्तर बने समुन्नत
अखिल राष्ट्र को दो ऐसा वर
महाप्रज्ञ के जन्म - दिवस पर
मुखर हो रहे श्रद्धा के स्वर।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

28. दुर्लभ सूर्य-युगल के दर्शन

दुर्लभ सूर्य - युगल के दर्शन
भरते हैं प्राणों में पुलकन
ढूंढ़ रहा पर महासूर्य को
वज्राहत - सा यह विरही मन

सक्षम महाप्रज्ञ का साया
युवाचार्य का चयन सुहाया
किन्तु कहां वह कलाकार है
जिसने श्रम से इन्हें बनाया ?

गण नन्दनवन गौरवशाली
फलावनत जिसकी हर डाली
जिसने फसलें नई उगाई
नहीं दीखता वह गणमाली

जब गण का दायित्व थमाया
तुमसे कुछ भी नहीं छुपाया
उड़ते प्राण - हंस को रोके
क्या ऐसा गुर नहीं सिखाया ?

जुड़ा अलौकिक समवसरण है
जोड़ी है पर परिवर्तन है
प्रमुखाजी का संरक्षण है
इस त्रिमूर्ति का अभिवन्दन है
धन्य आज का मंगल क्षण है
श्रद्धानत शत-शत वन्दन है

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण के पश्चात आचार्यश्री महाप्रज्ञ और युवाचार्यश्री महाश्रमण के प्रथम दर्शन पर समुच्चारित।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

29. आज क्या हो गया ?

चान्दनी बिलखती आज क्या हो गया ?
नखत हड़बड़ा रहे नखतपति खो गया।
चान्दनी बिलखती आज क्या हो गया ?

मंत्ररुद्ध ऊर्मियां-सिंधु क्यों न बोलता ?
रश्मियां स्तब्ध-सूर्य नेत्र क्यों न खोलता ?
ज्योति की फसल जो चिरंतन बो गया।
चान्दनी बिलखती आज क्या हो गया ?

पक्षिगण सम्भ्रमित, शून्य में ताकते
काल के कुचक्र की करालता मापते
निठुर, पुण्य-पाप एक सूत्र में पिरो गया।
चान्दनी बिलखती आज क्या हो गया ?

मृदुल नवनीत-सा, हृदय हिम-सा अमल
अकस्मात् बन गया निर्लेप ज्यों कमल
अश्रुधार से अखिल विश्व को भिगो गया।
चान्दनी बिलखती आज क्या हो गया ?

सृष्टि के ललाट का तिलक देदीप्यमान
मानवी देह में देव था मूर्तिमान
जागरण का प्रतीक नयन मूंद सो गया।
चान्दनी बिलखती आज क्या हो गया ?

आदि से अन्त तक उल्लसित नव बहार
वसुन्धरा को सुना शान्ति का मृदु मल्हार
पृष्ठ इतिहास के सुनहले सँजो गया।
चान्दनी बिलखती आज क्या हो गया ?
नखत हड़बड़ा रहे नखतपति खो गया।
चान्दनी बिलखती आज क्या हो गया ?

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

30. हंस उड़ चला

मानसरोवर से सर्वोत्तम हंस उड़ चला।
लाखों आंखें एक पलक में गई छलछला।।
मानसरोवर से सर्वोत्तम हंस उड़ चला।।

क्षीरोपम वाणी सुनने को विश्व समुत्सुक
मौन साध बैठा सहसा क्या सूझा कौतुक ?

था निरभ्र आकाश कहां से कड़की चपला ?
मानसरोवर से सर्वोत्तम हंस उड़ चला।।

मुग्ध विभोर निहार रहे थे लगा टकटकी
ओझल हुआ अचानक, सबकी सांसें अटकी

अन्तरिक्ष विदीर्ण, शोकाकुल डोली अचला।
मानसरोवर से सर्वोत्तम हंस उड़ चला।।

प्रज्ञा – परिमल पर असंख्य भ्रमर मँडराते
महाप्रज्ञ की पावन पद – रज शीष चढ़ाते

विस्मय–वही हृदय क्यों इतना निस्पृह निकला ?
मानसरोवर से सर्वोत्तम हंस उड़ चला।।

त्रिभुवनतिलक, त्रिकालजयी पुरुषार्थ तुम्हारा
युगों–युगों तक सकल सृष्टि का सबल सहारा

जीवन – पोथी का अक्षर –अक्षर है उजला।
मानसरोवर से सर्वोत्तम हंस उड़ चला।।
लाखों आंखें एक पलक में गई छलछला।
मानसरोवर से सर्वोत्तम हंस उड़ चला।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

31. धरित्री के हे अमर सपूत

अलौकिक ज्योतिपुञ्ज, छविधाम,
संघनायक, शासन सम्राट !
उभरता स्मृति-पट पर स्वयमेव
तुम्हारा वह व्यक्तित्व विराट

दिए तुमने जो भी संकेत
बने वे दिव्य प्रकाश-स्तम्भ
जहां भी टिके तुम्हारे पांव
हो गया मंजिल का प्रारम्भ

काल की क्रूर चोट ने हाय!
लिया है सुमन डाल से छीन
धरा पर लेकिन अविकल व्याप्त
रहेगी सौरभ सदा नवीन

गए तुम कलाकार, जो छोड़
कलाकृति अपनी भव्य, उदार
स्नेह - मेदुर नयनों से आज
देखता है उसको संसार

धरित्री के हे अमर सपूत,
यशस्वी, योगी, यति निष्काम
कमल - चरणों में बारम्बार
विश्व करता है तुम्हें प्रणाम।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

32. महाप्रज्ञ थे विरल

महाप्रज्ञ थे विरल।
शिशु-समान, शुचि, सरल।
महाप्रज्ञ थे विरल।।

विनम्रता, धैर्य के -
एकमात्र आयतन
भक्ति के, विरक्ति के
अद्वितीय संहनन
वज्र संकल्प देख
हिमखण्ड गए पिघल।
महाप्रज्ञ थे विरल।।

पादपद्म में प्रणत
प्रमुद अष्टसिद्धियां
आरती उतारती
अनगिनत उपाधियां
टिक गए चरण, वहां-
उगे सुनहरे कमल।
महाप्रज्ञ थे विरल।।

स्यमन्तक[1] मणि अमूल्य
रोग - शोक - तापहर
शान्ति - स्वर्ण बरसता
दिवारात्रि हर प्रहर
झलक मिल गई जिसे
जन्म हो गया सफल।
महाप्रज्ञ थे विरल।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शताब्दियों में कभी
पुण्यवान नरप्रवर
ज्योतिपुञ्ज की तरह
दिव्यलोक से उतर
बांटता है प्रकाश
हर अशेष तम – गरल।
महाप्रज्ञ थे विरल।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के अवसर पर

1. 'स्यमन्तक' मणि–प्रतिदिन आठ स्वर्ण–भार देने वाली तथा संकट और अपशकुन से रक्षा करने वाली बहुमूल्य मणि।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

33. गीतकार हो गया अगोचर

गीतकार हो या अगोचर
लेकिन उसके गीत अमर हैं।।
दशों दिशाओं में अनुगुञ्जित
मन्त्रपूत ऊर्जस्वल स्वर हैं।
गीतकार हो गया अगोचर
लेकिन उसके गीत अमर हैं।।

धरती का सौभाग्यतिलक-सा
हुआ अवतरित वह अतिमानव
वीतराग की विमल बानगी
अपरिमेय आध्यात्मिक वैभव
महासूर्य चल पड़ा छोड़ कर
किरणें अपनी यहां प्रखर हैं।
गीतकार हो गया अगोचर
लेकिन उसके गीत अमर हैं।।

आगम महासिन्धु का किया-
तलान्तस्पर्शी जो आलोडन
प्रश्न उत्तरित स्वतः, मिला क्यों
'महाप्रज्ञ' एकल संबोधन
सदियां रखें सहेज, दे गया-
ऐसे अगणित रत्न - निकर हैं।
गीतकार हो गया अगोचर
लेकिन उसके गीत अमर हैं।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मणिधारी मां का सपूत वह
था अमूल्य मणिपुरुष निराला
कालू ने परखा, तुलसी ने
यत्नों से जिसको संभाला
उसकी आभा से जिनशासन,
भैक्षव संघ सदा भास्वर हैं।
गीतकार हो गया अगोचर
लेकिन उसके गीत अमर हैं।।

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

34. मनुज रूप में था वह ईश्वर

मनुज रूप में था वह ईश्वर।।
सिद्धपुरुष कोई लोकोत्तर।
मनुज रूप में था वह ईश्वर।।

वाग्देवी का वरदपुत्र वह
बुद्धिचतुष्टय का था स्वामी
स्फुरित अचिंतन में से जिसकी
चिन्तनधारा बहुआयामी
सत्यं शिवं सदा क्षेमंकर।
मनुज रूप में था वह ईश्वर।।

करुणाविल, प्राञ्जल अनुशासन
महाप्रज्ञ का अद्भुत देखा
मुखमण्डल पर कभी रोष की
उभर न पाई रक्तिम रेखा
वत्सलता का अविरल निर्झर।
मनुज रूप में था वह ईश्वर।।

प्राणिमात्र के लिए उच्छ्वसित
नयनयुगल से अमित अनुग्रह
वाणी में वात्सल्य बरसता
जब आवश्यक होता निग्रह
हस्तकमल रहता मस्तक पर।
मनुज रूप में था वह ईश्वर।।

चुम्बकीय आभामण्डल का
परिक्षेत्र था इतना व्यापक
यान्त्रिक युग में भी न दृष्टिगत
यंत्र अभी तक उसका मापक
सकल विश्व था जिसका परिकर।
मनुज रूप में था वह ईश्वर।।

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

35. तुलसी-महाप्रज्ञ युग

तुलसी-महाप्रज्ञ युग की है कथा विलक्षण।।
विश्व-क्षितिज पर हुआ प्रतिष्ठित भैक्षव शासन।
तुलसी-महाप्रज्ञ युग की है कथा विलक्षण।।

प्रथम मिलन के क्षण मुहूर्त्त था कोई मंगल
जुड़ा तार से तार, प्रफुल्लित मानस - उत्पल

'एक प्राण दो देह' उक्ति के बने निदर्शन।
तुलसी - महाप्रज्ञ युग की है कथा विलक्षण।।

तुलसी की मति ने संजोया जो भी सपना
महाप्रज्ञ ने कार्यक्षेत्र वह माना अपना

सार्थक करने हेतु किया पुरुषार्थ - नियोजन।
तुलसी - महाप्रज्ञ युग की है कथा विलक्षण।।

तीर्थंकरस्वरूप श्री तुलसी सूत्रकार थे
महाप्रज्ञ गौतम गणधरवत भाष्यकार थे

घटित परस्पर होता भावों का संप्रेषण।
तुलसी - महाप्रज्ञ युग की है कथा विलक्षण।।

योग्य शिष्य-उपलब्धि सुगुरु के तप का फल है
पा सक्षम गुरु शिष्य मानता जन्म सफल है

गुरु में शिष्य, शिष्य में गुरु का है प्रतिबिंबन।
तुलसी- महाप्रज्ञ युग की है कथा विलक्षण।।

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

36. महाप्रज्ञ को नमन हमारा

महाप्रज्ञ को नमन हमारा।।
जिस हिमगिरि से हुई प्रवाहित
पावन प्रेक्षा – गंगाधारा।
महाप्रज्ञ को नमन हमारा।।

अनेकान्त जीवन का दर्शन
पौरुष के साक्षात निदर्शन
मात्र सत्य के प्रति आकर्षण
अर्हत् तुल्य स्वरूप निहारा।
महाप्रज्ञ को नमन हमारा।।

हृदय पारदर्शी, ऋजु, निश्छल
प्रवर प्रभास्वर आभामण्डल
अमृतस्रावी प्रवचन प्राञ्जल
कालजयी अजस्र स्वरधारा
महाप्रज्ञ को नमन हमारा।।

वसुधा की बहुमूल्य धरोहर
प्रज्ञापुरुष, अपूर्व यशोधर
विद्यावारिधि आज अगोचर
किन्तु न जाता उन्हें विसारा।
महाप्रज्ञ को नमन हमारा।।

स्रष्टा की कमनीय कलाकृति
सौम्य, मनोज्ञ, प्रभावक आकृति
नहीं दृष्टिगत कोई अनुकृति
जिस पर न्यौछावर जग सारा।
महाप्रज्ञ को नमन हमारा।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अपनी गति से काल बहेगा
युग प्रताप की कथा कहेगा
सतत चमकता नाम रहेगा
सदियों तक जैसे ध्रुवतारा।
महाप्रज्ञ को नमन हमारा।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

37. महाश्रमण के अभिनन्दन में

महाश्रमण के अभिनन्दन में
विहँस रहे धरती - अम्बर हैं।।
थिरक रही हैं दशों दिशाएं
गूंज रहे जय-जय के स्वर हैं।
महाश्रमण के अभिनन्दन में
विहँस रहे धरती- अम्बर हैं।।

मुनि सुमेर ने ढूंढ़ निकाला
संयम के सांचे में ढाला
किसे कल्पना थी छू लेंगे
बहुआयामी उच्च शिखर हैं।
महाश्रमण के अभिनन्दन में
विहँस रहे धरती - अम्बर हैं।।

दुर्लभ एक गुरु की छाया
दो - दो ने मिल जिन्हें बनाया
तुलसी - महाप्रज्ञ के हाथों-
चढ़ लघुवय में गए निखर हैं।
महाश्रमण के अभिनन्दन में
विहँस रहे धरती - अम्बर हैं।।

गौरव-हम इस युग में आए
ऐसे शासननायक पाए
ज्योति बांटते रहें विश्व को
जब तक नभ में शशि-दिनकर हैं।
महाश्रमण के अभिनन्दन में
विहँस रहे धरती - अम्बर हैं।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

38. कृतकृत्य नयन

दर्शन पा कृतकृत्य नयन हैं।।
कल्पकाम ये स्वर्णिम क्षण हैं।
दर्शन पा कृत कृत्य नमन हैं।।

एकादशम पट्टधर गण के
आस्थाकेन्द्र, शरण जन- जन के
धर्मधुरन्धर महाश्रमण हैं
दर्शन पा .....

स्वर्ग छटा धरती पर उतरी
वासन्ती सौरभ - सी निखरी
जहां टिकाए पुण्य चरण हैं
दर्शन पा .....

तपस्कांत मूरत मनभावन
अन्तस् में करुणा का सावन
घर-घर में गुंजित प्रवचन हैं
दर्शन पा .....

आर्यावर्त धरा गर्वोन्नत
लाल लाडले पर है साम्प्रत
रोमांचित, पुलकित कण - कण हैं
दर्शन पा .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

39. तपो तुम सहस्रांशु समान

तपो तुम सहस्रांशु समान ।।
उगाओ गण में स्वर्ण विहान।
तपो तुम सहस्रांशु समान।।
धरित्री को तुम पर अभिमान।
तपो तुम सहस्रांशु समान।।

कसो वीणा के फिर से तार
उठे मनमोहक मृदु झंकार
पुनः हो प्राणों का संचार
छँटे मूर्च्छा का सघन वितान।
तपो तुम सहस्रांशु समान।।

सिसकियों पर छाए सित हास
कसक पर विजय वरे उल्लास
खिले पतझड़ में नव मधुमास
करो पुरवैया को आह्वान।
तपो तुम सहस्रांशु समान।।

स्वयं के सक्षम कर्मठ हाथ
दसों आचार्यों का बल साथ
हुआ है तुमसे संघ सनाथ
सफल सार्थक हो हर अभियान।
तपो तुम सहस्रांशु समान।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गगन में जब तक सूरज–चन्द
चिरायु, अरुज हों नेमानन्द
थिरकते अभिनन्दन में छन्द
दिशाएं करती जय–जयगान।
तपो तुम सहस्रांशु समान।।
उगाओ गण में स्वर्ण विहान।
तपो तुम सहस्रांशु समान।।
धरित्री को तुम पर अभिमान।
तपो तुम सहस्रांशु समान।।

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के पदाभिषेक के उपलक्ष में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

40. महाश्रमण ! कोटि नमन

ज्योति चरण
तिमिर हरण
विजय वरण
महाश्रमण !
कोटि नमन

सौम्य वदन
स्निग्ध नयन
क्षमा सदन
महाश्रमण !
कोटि नमन

सिद्ध वचन
सुधा स्रवण
कलुष द्रवण
महाश्रमण !
कोटि नमन

मलय पवन
सुरभि सघन
ताप शमन
महाश्रमण !
कोटि नमन

विशद गगन
सिंधु गहन
तरुण तपन
महाश्रमण !
कोटि नमन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रेय शरण
भाव प्रवण
करे स्तवन
हर धड़कन
महाश्रमण !
कोटि नमन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

41. वंदन बारम्बार

शासन के सौभाग्य
सृष्टि के सतोगुणी शृंगार
मूर्तिमान वैराग्य
मही के महीयान मन्दार

शान्तिदूत क्या ? स्वयं शान्ति के
इस युग में अवतार
महातपस्वी महाश्रमण को
वंदन बारम्बार

तेज, तपोबल देख प्रणत
सम्पूर्ण सौर परिवार
यायावर चरणों के सम्मुख
मन्द सिन्धु का ज्वार

सुरगिरि को रोमांचित करता
अमल उच्च आचार
पराभूत उपमान
कीर्ति का दिशातीत विस्तार

अन्तस् समता, मृदुता,
वत्सलता का पारावार
निस्पृहता, निश्छलता,
ऋजुता वाणी में साकार

दर्शन- ज्ञान- चरित्र- वीर्य-तप
पंचामृत उपहार
अमृत महोत्सव के माध्यम से-
पा उपकृत संसार।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

42. अभिनन्दन है आज तुम्हारा

अभिनन्दन है आज तुम्हारा।।
वन्दन है भावों के द्वारा
अभिनन्दन है आज तुम्हारा।।

निखर उठा व्यक्तित्व विलक्षण
हुआ मुखर कर्तृत्व विलक्षण
श्रद्धा, विनय, समर्पण द्वारा
अभिनन्दन है आज तुम्हारा।।

अखिल विश्व में उदाहरण है
सुघड़ व्यवस्था अनुशासन है
नन्दनवन-सा संघ हमारा।
अभिनन्दन है आज तुम्हारा।।

कलाकार की सूझ निराली
अनुपमेय कृति ढूंढ़ निकाली
अपने हाथों जिसे सँवारा।
अभिनन्दन है आज तुम्हारा।।

युग-युग आभारी श्रमणीगण
पुलकित रोमांचित है कण-कण
चमका सचमुच भाग्य सितारा।
अभिनन्दन है आज तुम्हारा।।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के चयन दिवस पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

2. युग-परिवेश

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

43. यह भारतभूमि हमारी है

यह भारतभूमि हमारी है।।
इसकी संस्कृति का संरक्षण
हम सबकी जिम्मेदारी है
यह भारतभूमि हमारी है।।

जन्मे इसमें प्रभु वर्द्धमान
जन्मे इसमें गौतम महान
यह गांधी की बलिदान-धरा
यह मीरां की विषपान-धरा
स्वर्णाभ अमिट लिपि सारी है।
यह भारतभूमि हमारी है।।

बन रहा पिशाच दहेज आज
पीड़ित जिससे सारा समाज
भरती न मांग में भी रोली
जलती कन्याओं की होली
जाती न सुनी सिसकारी है।
यह भारतभूमि हमारी है।।

बढ़ भ्रष्टाचार अपार गया
यश पुरखों का उस पार गया
सूखा नैतिकता का वट है
द्रव्यों में हाय मिलावट है
संक्रामक यह बीमारी है।
यह भारतभूमि हमारी है।।

लग गया पनपने जातिवाद
धार्मिक स्थानों में भी विवाद
मंदिर,मठ, तीर्थों के झगड़े
हैं न्यायालय की शरण पड़े
स्वार्थी हर कार्य-प्रभारी है।
यह भारतभूमि हमारी है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रक्षक हैं वास्तव में भक्षक
डसते जनता को बन तक्षक
पलती थी जिसकी लिए आड़
चर रही खेत को वही बाड़
फैली सत्ता की मारी है।
यह भारतभूमि हमारी है।।

कर विस्मृत मर्यादा स्वकीय
बन रहे सुरापी भारतीय
अपहरण, फिरौती, लूटपाट
हिंसा का उद्धत ठाट - बाट
स्थिति शोचनीय अति भारी है।
यह भारतभूमि हमारी है।।

यह अपना आर्यावर्त देश
गरिमामण्डित इसके प्रदेश
गोशीर्ष भरी हर घाटी है
मुक्ता उपजाती माटी है
छवि स्वर्गलोक से न्यारी है।
यह भारतभूमि हमारी है।।

नेताओं में हो देश-प्रेम
सीखें संतों से योग- क्षेम
जन-जन में नैतिक निष्ठा हो
अर्जित वह पुनः प्रतिष्ठा हो
युग रहे सदा आभारी है
यह भारतभूमि हमारी है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

समवेत प्रचार-प्रसार करें
संस्कृति का पुनरुद्धार करें
जन-जन में नव संस्कार भरें
सब मनुज परस्पर प्यार करें
खिल उठे सत्य-फुलवारी है।
यह भारतभूमि हमारी है।।

प्रामाणिक हर इन्सान बने
तप-संयम-त्याग प्रधान बने
संशोधित नया विधान बने
फिर विश्वमान्य पहचान बने
उस मुहूर्त्त की बलिहारी है।
यह भारतभूमि हमारी है।।
इसकी संस्कृति का संरक्षण
हम सबकी जिम्मेदारी है।
यह भारतभूमि हमारी है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

44. ऋषि-मुनियों ने सिखलाया था

ऋषि-मुनियों ने सिखलाया था।।
कर स्वयं साधना अग-जग को
समता का पाठ पढ़ाया था।
ऋषि - मुनियों ने सिखलाया था।।

माना जाता है संसृति में
नर सभी प्राणियों में महान
सबमें चैतन्य प्रवाहित है
हिन्दू हों चाहे मुसलमान
पंजाबी, उड़िया, बंगाली
मद्रासी या राजस्थानी
रखती न कभी भी भेदभाव
गुरु की पवित्र, मंगल वाणी
हैं भूमिपुत्र हम सभी एक-
यह महामंत्र बतलाया था।
ऋषि-मुनियों ने सिखलाया था।।

हम किसी प्रान्त में रहें किन्तु
सबसे पहले हैं भारतीय
इस प्रतीति की रक्षा करना
कर्त्तव्य हमारा है स्वकीय
है वीर-प्रसू यह वसुन्धरा
जिसकी गौरव-गरिमा अगाध
कहती है अपने पुत्रों से-
हत्या न करो तुम निरपराध
हिंसा लक्षण कायरता का-
यह सूक्त हमें समझाया था
ऋषि-मुनियों ने सिखलाया था।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

होते हैं कोमल–कुसुम संत
जिनसे प्रतिपल सौरभ छूटे
करते ही जिनका पुण्य–स्मरण
जन्मान्तर के बन्धन टूटे
व्रतनिष्ठ, अहिंसक, सौम्य, शांत
करुणा के भाण्डागार संत
चिर आधि–व्याधि की ज्वाला में
हैं दिव्य सुधा की धार संत
जब भी दिग्मूढ़ हुआ युग तब,
संतों ने पंथ सुझाया था
ऋषि – मुनियों ने सिखलाया था
कर स्वयं साधना अग – जग को
समता का पाठ पढ़ाया था।
ऋषि – मुनियों ने सिखलाया था।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

45. है महारोग यह छुआछूत

है महारोग यह छुआछूत ।।
स्वार्थी तत्त्वों - द्वारा प्रसूत।
है महारोग यह छुआछूत।।

है मनुज-जाति अविभक्त, एक
हड्डियां, मांस, रस, रक्त एक
सबका है प्राण - प्रवाह एक
संज्ञान चेतना चाह एक
सब एक सूत्र से अनुस्यूत।
है महारोग यह छुआछूत।।

होते हैं मुख - मलद्वार एक
सबका उत्पत्ति - प्रकार एक
लेते हैं सब उच्छ्वास, श्वास
सुन मृत्यु सभी होते उदास
दुख से हैं सारे पराभूत।
है महारोग यह छुआछूत।।

धरती पर रखते सभी पांव
चलती है सबके साथ छांव
लगती है सबको भूख, प्यास
आशा, तृष्णा के सभी दास
सब अशुचि - रोग से हैं अपूत।
है महारोग यह छुआछूत।।

है मर्त्य मात्र का वंश एक
नर में नरता का अंश एक
हिन्दू, मुस्लिम, हरिजन, चमार
ये चिन्तन के उन्मद विकार
दानवता के हैं दुष्ट दूत।
है महारोग यह छुआछूत।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

46. भस्म हुई अगणित कन्याएं

भस्म हुई अगणित कन्याएं इस दहेज की होली में।।
इसी प्रथा के कारण कितनी बैठ न पाई डोली में।
भस्म हुई अगणित कन्याएं इस दहेज की होली में।।
झुलस गए मां-बाप कई, कर विदा न पाए डोली में।
भस्म हुई अगणित कन्याएं इस दहेज की होली में।।

भीष्म महामारी है यह दावानल की चिनगारी है
भस्मक रोग लगा, कोई भी बच न सका संसारी है
कम ही रहता जितना भी कुछ डालो वर की झोली में।
भस्म हुई अगणित कन्याएं इस दहेज की होली में।।

सुरसा चारों ओर खड़ी यह लम्बा-चौड़ा मुँह बाए
युग करता आह्वान-आज बजरंगबली कोई आए
डट कर करे प्रहार गदा का इसकी गर्दन पोली में।
भस्म हुई अगणित कन्याएं इस दहेज की होली में।।

कर्णधार धरती के सोचो-क्या दायित्व तुम्हारा है ?
उबर सके अब इस दानव से कैसे देश हमारा है ?
थोड़ा-सा बलिदान चाहिए बस युवकों की टोली में।
भस्म हुई अगणित कन्याएं इस दहेज की होली में।।

यह नृशंस अन्याय देख क्यों अरे भुजा न फड़कती है?
युवाशक्ति की शौर्य-दामिनी इस पर क्यों न कड़कती है ?
जटिल समस्या यह, टालोगे कब तक इसे ठिठोली में ?
भस्म हुई अगणित कन्याएं इस दहेज की होली में।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

47. कुटिल, काला नाग

बन गया क्यों आज मानव कुटिल काला नाग ?
उगलता ज्वालामुखी-सी वह भयंकर आग।
बन गया क्यों आज मानव कुटिल काला नाग ?

पर कभी क्या नष्ट करता
नाग अपना वंश?
क्या कभी अपने जनों को
वह लगाता दंश ?
खेलता सम्बन्धियों के रक्त से क्या फाग ?
बन गया क्यों आज मानव कुटिल काला नाग ?

एक ही है वृन्त सबका
एक ही है मूल
एक ही जल से सभी
सींचे गए फल - फूल
छीनते हैं हाय! किससे तनय और सुहाग ?
बन गया क्यों आज मानव कुटिल काला नाग ?

यह कु-फल किस कर्म का है?
यों बढ़ा उन्माद
देश-पुत्रों को न अपनी-
विशद संस्कृति याद
सीखता था जगत जिनसे अहिंसा, तप, त्याग!
बन गया क्यों आज मानव कुटिल काला नाग ?

बुद्ध, नानक, वीर प्रभु का
यह पवित्र प्रदेश
कौन - से गुरु ने दिया
आतंक का संदेश ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लूट, हत्या, द्रोह से फिर किसलिए अनुराग ?
बन गया क्यों आज मानव कुटिल काला नाग ?

सुबह का भूला अगर
घर लौट आता शाम
कौन कहता है उसे
भटका हुआ या वाम ?
सर्वदा अंकित न रहता युगपटल पर दाग
बन गया क्यों आज मानव कुटिल काला नाग ?
उगलता ज्वालामुखी – सी वह भयंकर आग।
बन गया क्यों आज मानव कुटिल काला नाग ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

48. इतिहास के आंसू

आंसू इतिहास बहाता है।।
रो-रो कर अपनी मनोव्यथा
अग-जग से वह बतलाता है।
आंसू इतिहास बहाता है।।

अवशेष आदि को देख-देख
अन्वेषक लेते मुझे जान
जो करते रहते पूछताछ
मिल जाता मेरा उन्हें ज्ञान
अध्ययन निरन्तर करके भी
हो सकता है कुछ तथ्यबोध
इसलिए सुधी निष्ठापूर्वक
करते रहते हैं सतत शोध
पर यथार्थ तक कोई भी नर
न कदापि पहुँचने पाता है।
आंसू इतिहास बहाता है।।

जिसका भी विश्व-पटल पर है
महनीय जनों में शीर्ष स्थान
उसकी दुर्बलताओं के भी
मिलते ही रहते हैं प्रमाण
पर गुरु का जीवन शिष्य लिखे
तो गुण ही पाते हैं उभार
सेवक भी अपने स्वामी की
गरिमा का ही करते प्रसार
एकांगी अंकन के कारण
प्रस्तुति में सत्य न आता है।
आंसू इतिहास बहाता है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जनसाधारण के सद्गुण का
करता कोई उल्लेख नहीं
युग के पटचित्रों पर उसका
होता न प्राप्त अनुरेख कहीं
दिशि-विदिशा से न फूट पाता
उसकी प्रशस्ति में बोल कभी
धरती या अंबर के वासी
करना न चाहते मोल कभी
इस उदासीनता से प्रसून
डाली पर ही मुरझाता है।
आंसू इतिहास बहाता है।।

कुछ जन्मजात ही होते हैं
यश-बल-विद्या-वैभवविहीन
गणमान्य कुलीनों के द्वारा
माना जाता है जिन्हें हीन
उनकी विशेषताएं होती
अन्तर्हित कहीं रसातल में
या उन्हें निमज्जित कर देते
स्वार्थी जन कपट-कमण्डल में
धनबल, भुजबल के सम्मुख यों
गुणवान पिछड़ता जाता है।
आंसू इतिहास बहाता है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सित–असित पक्ष दोनों को ही
धारण करता प्रत्येक मास
कोमल कमनीय कुसुम में भी
होता है कांटों का निवास
ज्योतिर्मय दीप – शिखा से भी
उठता ही रहता है कज्जल
रत्नाकर के भीतर भी तो
बसते ही हैं मकरों के दल
पर सर्वांगस्पर्शी चित्रण
कोई करके न दिखाता है।
आंसू इतिहास बहाता है।।
रो – रो कर अपनी मनोव्यथा
अग – जग से वह बतलाता है।
आंसू इतिहास बहाता है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

49. कवि, यह कलम पुरानी है

कवि, यह कलम पुरानी है।।
नई कलम से संसृति में -
नई चेतना लानी है।
कवि, यह कलम पुरानी है।।

रूखी-सूखी आज धरा
लगती उन्मन, अनुर्वरा
मात्र विगत के गौरव की-
इसके पास कहानी है।
कवि, यह कलम पुरानी है।।

मानवता मृत-प्राय पड़ी
खोयी संजीवनी जड़ी
बतलाता हनुमान नहीं-
उसकी कहीं निशानी है।
कवि, यह कलम पुरानी है।।

जरा-जर्जरित सत्य हुआ
पूर्णतया कृतकृत्य हुआ
जीर्ण-शीर्ण कृशकाय उसे
स्मृति में नहीं जवानी है।
कवि, यह कलम पुरानी है।।

वातावरण विषैला है
जीवन बना कषैला है
जलधि, जलद दोनों का ही
सूखा सारा पानी है।
कवि, यह कलम पुरानी है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जब तलवार न चल सकती
तोप न आग उगल सकती
युग की रक्षा तब केवल
करती तेरी वाणी है।
कवि, यह कलम पुरानी है।।

आज बटखरे बदल चुके
धातु पुराने पिघल चुके
रच कर नव संगीत तुझे
अभिनव, अलख जगानी है।
कवि, यह कलम पुरानी है।।
नई कलम से संसृति में-
नई चेतना लानी है।
कवि, यह कलम पुरानी है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

50. कविते, क्या तू कुंठित है?

कविते, क्या तू कुंठित है ?
परम्परा प्राचीन हुई क्या तेरी भू-लुंठित है ?
कविते, क्या तू कुंठित है?

लघु-गुरु पर कुछ बन्धन थे
सुनियोजित, स्वर, व्यंजन थे
अनुप्रास, लय, यति, मात्रा
आकर्षक आभूषण थे
तटबन्धों को तोड़ किधर बहने को उत्कंठित है ?
कविते, क्या तू कुंठित है ?

मूर्च्छित को सहलाती थी
पुनः चेतना लाती थी
स्नेहदान कर प्राणों के-
बुझते दीप जलाती थी
है आश्चर्य स्वयं कैसे आज भ्रमित, अनियंत्रित है ?
कविते, क्या तू कुंठित है ?

योद्धा जब होते कायर
पीठ दिखाने को तत्पर
शौर्य जगाती थी उनमें
छन्द वीररस के गाकर
वह तेरी गौरव-गाथा हुई कहां अवगुंठित है ?
कविते, क्या तू कुंठित है ?

दुर्निवार आतंक बढ़ा
भूत स्वार्थ का शीष चढ़ा
लूट देश को रहे सभी
क्या अनपढ़ , क्या लिखा-पढ़ा
लुप्त-प्राय जो छवि, उसको करती क्यों न प्रतिष्ठित है?
कविते , क्या तू कुंठित है ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नहीं कहीं भी हो ताला
और न कोई रखवाला
फिर भी भीति न चोरी की
ढूंढ़े मिले न धन काला
भारत को इस महिमा से क्यों न कर रही मंडित है ?
कविते , क्या तू कुंठित है ?
परम्परा प्राचीन हुई क्या तेरी भू-लुंठित है?
कविते, क्या तू कुंठित है ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

51. निर्मम विधान

हर पंथ यहां टेढ़ा-मेढ़ा, दुर्गम है।।
कोई भी बाधा-रहित न सरल, सुगम है।
हर पंथ यहां टेढ़ा-मेढ़ा, दुर्गम है।।

जिस दिशि में पांव धरो चुभ जाती शूलें
जिसको भी वरो खटकती अगणित भूलें
है एक सनातन परम्परा यह भव की
अथवा दुर्बल संकीर्ण दृष्टि मानव की
कुछ भी हो पर न निरापद एक निगम है।
हर पंथ यहां टेढ़ा-मेढ़ा, दुर्गम है।।

सरिताएं जब सागर से मिलने जाती
दुर्भेद्य शिलाखण्डों से वे टकराती
भीषण कान्तारों में से पड़ता जाना
प्रत्येक चरण पर होता कष्ट उठाना
व्यवधान प्रकृति का अपना एक नियम है।
हर पंथ यहां टेढ़ा-मेढ़ा, दुर्गम है।।

रवि-शशि के लिए राहु है गति-अवरोधी
बादल भी जन्मजात आलोक - विरोधी
रजकण ऊँचे उठ-उठकर बहुत उछलते
उनको आवृत करने के लिए मचलते
प्रतिरोध सृष्टि का स्वाभाविक-सा क्रम है।
हर पंथ यहां टेढ़ा-मेढ़ा, दुर्गम है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रभु महावीर के कील कान में ठोकी
ईसा की काया गई क्रास पर झोकी
मीरां को प्याला पड़ा जहर का पीना
गोली ने जीवन राष्ट्रपिता का छीना
संसृति का हाय विधान बहुत निर्मम है।
हर पंथ यहां टेढ़ा – मेढ़ा, दुर्गम है।।
कोई भी बाधा–रहित न सरल, सुगम है।
हर पंथ यहां टेढ़ा – मेढ़ा, दुर्गम है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

52. नियति निराली

पंख तोड़ कर उड़ने का अवकाश दिया है
शंख फोड़ कर मंदिर का आवास दिया है

राजमार्ग भी निष्कंटक निर्बाध कहां हैं
जाल बिछाए छिपे अनगिनत व्याध वहां हैं
श्वेत पत्र मिलता समर्थ भ्रष्टाचारी को
दण्ड भोगते असमर्थ निरपराध जहां हैं
प्रतिक्रिया का प्रतिफल दुस्सह त्रास दिया है
पंख तोड़ कर .....

शीतल स्वच्छ सलिल पर आग यहां जलती है
नियति निराली ऋजु, उदार को भी छलती है
सांस – सांस पर संघर्षों के बादल गहरे
दीपक की लौ झंझावातों में पलती है
निष्फल सपनों का नयनों में वास दिया है
पंख तोड़ कर .....

सुलभ सहज ही यहां इष्ट वरदान नहीं है
मूक भक्ति की इस युग में पहचान नहीं है
कीर्तन–भजन, अर्चना, पूजा के द्वारा भी
अगम अगोचर का होता संधान नहीं है
मनस्तोष के लिए मात्र आश्वास दिया है
पंख तोड़ कर .....

पौरुष है तो पांवों का आधार बहुत है
श्रद्धा है तो सपनों को आकार बहुत है
शंख, धूप, केशर, चन्दन की उलझन छोड़ो
प्रभु को तो मन मंदिर का संसार बहुत है
शुद्ध हृदय में उसने सदा निवास किया है
पंख तोड़ कर .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

53. मैं अगाया गीत गाऊं

मैं अगाया गीत गाऊं
मौन को माध्यम बनाऊं।
मैं अगाया गीत गाऊं।।

दीर्घ-लघु स्वर-व्यंजनों में
गीत रचती आ रही हूँ
गुनगुनाती हूँ अहर्निश
पर न गाने पा रही हूँ
शब्द से नि:शब्दता की
इसलिए अब शरण जाऊं।
मैं अगाया गीत गाऊं।।

नयन-युग खोले निरंतर
सिन्धु को मैंने निहारा
पहुँच तल तक पर न पाई
अगम ही अब तक किनारा
दर्शनों की लांघ सीमा
अदर्शन में गति बढ़ाऊं।
मैं अगाया गीत गाऊं।।

लक्ष्य-साधन का लिए व्रत
कोश लाखों चल चुकी हूँ
अमा की काली निशा में
दीप बन कर जल चुकी हूँ
शिखर की दूरी न घटती
इसलिए स्थिरता बढ़ाऊं।
मैं अगाया गीत गाऊं।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उलझ चिन्तन – व्यूह में ही
खो दिया यह जन्म सारा
बही संकल्पों – विकल्पों
की सदैव अजस्र धारा
निर्विकल्प समाधि को अब–
ध्येय जीवन का बनाऊं।
मैं अगाया गीत गाऊं।।
मौन को माध्यम बनाऊं।
मैं अगाया गीत गाऊं।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

54. पिया जिसे पीयूष मान कर

पिया जिसे पीयूष मान कर निकला वही गरल है।
सत्य जिसे समझा, अन्तर्हित उसमें दुर्दम छल है।।
पिया जिसे पीयूष मान कर निकला वही गरल है।।

लगा दूर से मुझे शिलोच्चय बहुत मनोहर, सुन्दर
चपल प्राण व्याकुल चढ़ने को सत्वर उच्च शिखर पर
लुभा रही थी हृदय अनवरत लहराती हरियाली
निश्चल, नीरव अधित्यका को छूती सघन घनाली

भावुक चरण चढ़े तब सारी श्री-सुषमा ओझल है।
पिया जिसे पीयूष मान कर निकला वही गरल है।।

सरिता के दोनों तीरों पर बैठी स्थिर बकमाला
नयन अधखुले, तन्मयता से धरती ध्यान निराला
एक टांग के बल पर कैतव मौन साधना करती
पंखों की परमोज्ज्वलता भी मानस को अपहरती

मत्स्य दीखते ही प्रमुदित हो, जाती उन्हें निगल है।
पिया जिसे पीयूष मान कर निकला वही गरल है।।

नील गगन में दिव्य प्रभाविल चन्द्र मन्द मुस्काता
चारु चांदनी से वसुधा के कण-कण को नहलाता
जिसकी प्रिय छवि चक्रवाक में अद्भुत स्फुरणा भरती
औषधिसिक्त कलाएं अतिशय संजीवनी वितरती

उस शशधर पर भी कलंक का टीका लगा प्रबल है।
पिया जिसे पीयूष मान कर निकला वही गरल है।
सत्य जिसे समझा, अन्तर्हित उसमें दुर्दम छल है।।
पिया जिसे पीयूष मान कर निकला वही गरल है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

55. निष्फल है केवल वेश रुचिर

निष्फल है केवल वेश रुचिर।।
मन पर गहराया ही रहता
यदि प्रतिपल अविरल क्लेश–तिमिर
निष्फल है केवल वेश रुचिर।।

शीतल जल – गर्भित घनमाला
धारण करती विद्युज्ज्वाला
भीतर–भीतर यदि वैसे ही
पलता रहता आवेश– तिमिर
निष्फल है केवल वेश रुचिर।।

पर्वत होकर भी हरितकाय
रखता है ज्वालामुखी हाय
अंतर्मानस में वैसे ही
यदि छिपा हुआ विद्वेष–तिमिर
निष्फल है केवल वेश रुचिर।।

मंजुल – सित ज्योत्स्नाधर मयंक
है किन्तु कलेजे पर कलंक
त्यों चित्तभूमि पर भी अंकित
कल्मष का यदि अवशेष तिमिर।
निष्फल है केवल वेश रुचिर।।

होता है कोमल कांत फूल
पर अंतस् में हैं तीक्ष्ण शूल
त्यों स्नेहिल शब्दों में भी यदि
माया का निहित विशेष तिमिर
निष्फल है केवल वेश रुचिर।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

56. दीप मैं कैसे जलाऊं?

देव, तेरी अर्चना में दीप मैं कैसे जलाऊं ?
कालिमा छाई हृदय पर मैं उसे कैसे छिपाऊं ?
देव, तेरी अर्चना में दीप मैं कैसे जलाऊं ?

दीप की बाती हमेशा स्नेह से सिंचित रही है
निष्करुण अन्तःकरण में किन्तु वह किंचित् नहीं है
शून्य मन – मंदिर इसे हे नाथ, कैसे जगमगाऊं ?
देव, तेरी अर्चना में दीप मैं कैसे जलाऊं ?

मैं पुजारिन हूँ पुरानी नित नए पर पाप मेरे
कभी संध्या या निशा में कभी हो जाते सवेरे
वासनाओं के वलय को भेद कैसे निकल पाऊं ?
देव, तेरी अर्चना में दीप मैं कैसे जलाऊं ?

सोचती कुछ और ही हूँ बोलती कुछ और भाषा
इस विषमता से सदा परिणाम में मिलती निराशा
तार वीणा के विखण्डित मधुर लय कैसे सुनाऊं ?
देव, तेरी अर्चना में दीप मैं कैसे जलाऊं ?

कुछ नहीं अज्ञात, जैसा भी रहा इतिवृत्त मेरा
किन्तु अब सर्वात्मना स्वीकार्य हर संकेत तेरा
शक्ति–सम्प्रेषण बिना व्यवधान मैं कैसे मिटाऊं ?
देव, तेरी अर्चना में दीप मैं कैसे जलाऊं ?
कालिमा छाई हृदय पर मैं उसे कैसे छिपाऊं ?
देव, तेरी अर्चना में दीप मैं कैसे जलाऊं ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

57. अश्रुपूरित नयन

अश्रुपूरित नयन, मानस भी व्यथा से म्लान।।
अधर–युग पर झलकती फिर भी मधुर–मुस्कान।
अश्रुपूरित नयन, मानस भी व्यथा से म्लान।।

ऊर्मियां अति स्थिर, अचंचल, ठिठुरती है आग
उषा का भी नहीं अकलुष, अनाविल अनुराग
पूर्णिमा का सकल शशधर भी नहीं अकलंक
कमल के सौंदर्य का उत्पत्ति–स्थल है पंक
कंटकों से जूझती है सुमन की संतान।
अश्रुपूरित नयन, मानस भी व्यथा से म्लान।।

उठ रही काली घटाएं पर पपीहा मौन
प्रश्न मछली के लिए है सलिल का भी गौण
चन्द्रमा की चांदनी से चकोरे अनभिज्ञ
मूढ़ का सम्मान अतिशय, है उपेक्षित विज्ञ
भेदता साम्राज्य तम का नहीं किरण–वितान।
अश्रुपूरित नयन, मानस भी व्यथा से म्लान।।

आँख पर पहरा लगाया दृश्य अपरम्पार
रह गया आधेय केवल खो गया आधार
झूमते थे स्वर–रसिकजन सुन मृदुल झंकार
तोड़ती है स्वयं वीणा आज अपने तार
विसंवादी है समूचे विश्व का परिधान।
अश्रुपूरित नयन, मानस भी व्यथा से म्लान।।

सिन्धु के उस पार को लूं एक बार टटोल
विपर्यास – विमुक्त होगा अन्तरिक्ष खगोल?
डुबाते नाविक वहां भी नाव को मझधार
चुग रहे कंकर अनवरत राजहंस उदार
राहु से आक्रान्त होता सूर्य ज्योतिर्मान।
अश्रुपूरित नयन, मानस भी व्यथा से म्लान।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

58. क्या भूलें ? क्या याद करें ?

क्या भूलें ? क्या याद करें?
संकट पर संकट झेले हैं
किस – किस का अवसाद करें ?
क्या भूलें ? क्या याद करें ?

झंझावात शान्त होते ही
घुमड़ घटाएं आ जाती
कड़क – कड़क कर विद्युत अपने
दारुण दांत दिखा जाती
किस – किस से संवाद करें
क्या भूलें ? क्या याद करें ?

महाकाल – सा उठा ज्वार
जब नाव सिन्धु को चीर चली
पांव धरा पर धरते ही
आया भीषण भूचाल छली
किस – किस का प्रतिवाद करें ?
क्या भूलें ? क्या याद करें ?

चुना राजपथ फिर भी देखा
इधर व्याघ्र है उधर तटी
मूल्यवान घड़ियां जीवन की
संघर्षों के बीच कटी
कैसे हर्ष – निनाद करें ?
क्या भूलें ? क्या याद करें ?

हँस – हँस हालाहल पीना ही
है जीवन का अर्थ यहां
कांटों में पलने वाले को
माना गया समर्थ यहां
फिर क्यों व्यर्थ विषाद करें ?
क्या भूलें ? क्या याद करें ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

59. कोई न किसी का साथी है

कोई न किसी का साथी है।।
दीपक में है यदि स्नेह भरा तो जलती रहती बाती है।
उसके अभाव में लौ अपना अस्तित्व नहीं रख पाती है।
कोई न किसी का साथी है।।

फूलों पर मधुपों की टोली
गुञ्जाती अपनी प्रिय बोली
प्रमुदित होकर पीती पराग
मँडराती गाती मधुर राग
पर मुरझाने की बेला में वह गीत दूर से गाती है।
कोई न किसी का साथी है।।

पेड़ों पर पंछी आते हैं
कलरव कर मोद मनाते हैं
वे फुदक-फुदक शाखाओं पर
अतिशय अनुराग दिखाते हैं
वह विहगावलि भी पतझड़ में मुड़ अन्य दिशा में जाती है।
कोई न किसी का साथी है।।

मन की ममता है- 'मेरापन'
उलझन में डाल रहा जीवन
अब तक मिलता इतिहास नहीं
आगे का भी आभास नहीं
यह मृगमरीचिका है केवल प्राणों को बहुत लुभाती है।
कोई न किसी का साथी है।।

स्वार्थों का हैं संघात यहाँ
निस्वार्थ प्रीति की बात कहाँ
बन जाते सभी अपरिचित - से
होता है स्वार्थ - विघात जहाँ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चिर सम्बन्धों–अनुबन्धों में भी गहन दरारें आती है।
कोई न किसी का साथी है।।
दीपक में है यदि स्नेह भरा तो जलती रहती बाती है।
कोई न किसी का साथी है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

60. दिल का दुख

दिल का दुख दिल में रहने दो।।
आंसू बन कर मत बहने दो।
दिल का दुख दिल में रहने दो।।

यह ऐसा अद्‌भुत है निधान
जिसका हर कण है मूल्यवान
वंचक पग-पग पर खड़े यहाँ
क्यों दृष्टि किसी की पड़े यहाँ
मत तटबन्धों को ढहने दो।
दिल का दुख दिल में रहने दो।।

सौरभ फूलों में जब तक है
जीवन ही उनका तब तक है
हो जाते यदि वे गन्धहीन
तो जीर्ण-शीर्ण लगते मलीन
शूलों में ही निर्वहने दो।।
दिल का दुख दिल में रहने दो।।

सर्वस्व सीप का मोती है
आंचल में रखकर सोती है
वह भी जब बाहर आएगा
तो उसको बींधा जाएगा
यह तथ्य मुझे भी कहने दो।।
दिल का दुख दिल में रहने दो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कोयला धैर्य रख कर अमाप
चिरकाल झेल भूगर्भ –ताप
बन हीरा बाहर आएगा
तो शाण चढ़ाया जाएगा
रासायन – संकट सहने दो।
दिल का दुख दिल में रहने दो।।
आंसू बन कर मत बहने दो।
दिल का दुख दिल में रहने दो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

61. विष को हँस-हँस पीते जाओ

विष को हँस-हँस पीते जाओ।।
बन नीलकंठ जीते जाओ।
विष को हँस - हँस पीते जाओ।।

संघर्षों का क्या पार कहीं ?
संघर्षहीन संसार नहीं
गीले सूखे सब जल जाते
यह बात बिना आधार नहीं
बस होठों को सीते जाओ।
विष को हँस-हँस पीते जाओ।।

इतिहास हमें बतलाता है
विष स्वतः सुधा बन जाता है
जो अधरों पर धरता प्याली
वह शिव-शंकर कहलाता है
मत गीत व्यर्थ बीते गाओ
विष को हँस-हँस पीते जाओ।।

ढलने के लिए पिघलना है
गोते के बाद उछलना है
हर चोट नया जीवन देती है
ठोकर का अर्थ सँभलना है
लो अनुभव, मत रीते जाओ।
विष को हँस-हँस पीते जाओ।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कष पर चढ़ स्वर्ण निखरता है
घिस कर गोशीर्ष महकता है
छिल कर, पिल कर ही इक्षुदण्ड
रस मधुर सदैव वितरता है
सह - सह फल मनचीते पाओ।
विष को हँस - हँस पीते जाओ।।
बन नीलकंठ जीते जाओ।
विष को हँस - हँस पीते जाओ।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

62. सुहाता नहीं मुझे व्यवहार

सुहाता नहीं मुझे व्यवहार।।
निभाना जहाँ पड़े उपचार।
सुहाता नहीं मुझे व्यवहार।।

करूं जब चाहे जिससे बात
दिवस - निशि में या सायं-प्रात
नहीं रुचिकर, फिर भी हर बार
झेलना पड़ता यह व्याघात
शिथिल कर मन - वीणा के तार।
सुहाता नहीं मुझे व्यवहार।।

उगाने मन - उपवन में फूल
सदा एकांत रहा अनुकूल
विजनता, नीरवता से प्रेम
परिस्थिति किन्तु रही प्रतिकूल
मिला है जमघट का संसार।
सुहाता नहीं मुझे व्यवहार।।

जहाँ सहना पड़ता अन्याय
विहत होता मानस निरुपाय
आंसुओं से कर लेती स्नान
सत्य को देख व्यथित मृत-प्राय
हृदय करता न किन्तु स्वीकार।
सुहाता नहीं मुझे व्यवहार।।

देखती हूँ मन - वाणी भिन्न
शीघ्र हो जाती विचलित, खिन्न
बोल कर कुछ, फिर भी सम्बन्ध-
नहीं करने पाती विच्छिन्न
इसे तुम जीत कहो या हार।
सुहाता नहीं मुझे व्यवहार।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जानती हूँ यह झूठा व्यक्ति
दिखाता है कृत्रिम अनुरक्ति
प्रकृति खाती न कभी भी मेल
झूठ से क्योंकि सदैव विरक्ति
विवश हूँ पर करने सत्कार।
सुहाता नहीं मुझे व्यवहार।।
निभाना जहाँ पड़े उपचार।
सुहाता नहीं मुझे व्यवहार।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

63. झुकना सदा न श्रेयस्कर

झुकना सदा न श्रेयस्कर।।
घट जाता इससे भी स्तर।
झुकना सदा न श्रेयस्कर।।

संतप्तों पर करुणा कर
झुके घनाघन वसुधा पर
कर डाला खाली उनको
गिरि-शिखरों ने वेध उदर
संचित वैभव गया बिखर।
झुकना सदा न श्रेयस्कर।।

लहराती तरु - शाखाएं
झुकी सहज दाएं - बाएं
तोड़ लिए फल पकड़ उन्हें
धूलि - धूसरित आशाएं
बिछुड़ गया प्यारा परिकर।
झुकना सदा न श्रेयस्कर।।

क्षीर-सिन्धु को मान बड़ा
वन्दन करने लगा घड़ा
घुटा श्वास, रुक गया गला
महंगा बहुत प्रणाम पड़ा
भाराक्रान्त हुआ अन्तर।
झुकना सदा न श्रेयस्कर।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

न्याय–नीति, सिद्धांतों का
स्वीकृत मर्यादाओं का
हो रक्षण अनिवार्यतया
परम्परा, व्रत, नियमों का
भूधर ज्यों अविचल रह कर।
झुकना सदा न श्रेयस्कर।।
घट जाता इससे भी स्तर।
झुकना सदा न श्रेयस्कर।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

64. क्या मंद भाग्य का रोना है

क्या मंद भाग्य का रोना है ?
रो - रोकर नयन गँवा देंगे
फिर भी न कभी कुछ होना है।
क्या मंद भाग्य का रोना है ?

दो हाथ अरे भगवान स्वयं
जो करते विधि-निर्माण स्वयं
इनसे टकरा कर हट जाती
बाधाओं की चट्टान स्वयं
तापों, अभिशापों के तम में
श्रम का दीपक संजोना है।
क्या मंद भाग्य का रोना है ?

हँसने में साथी जुड़ जाते
अपनत्व, स्नेह भी दिखलाते
पर दारुण दुख की घड़ियों में
एकाकी अपने को पाते
कोई भी देता साथ नहीं
अपना विश्वास न खोना है।
क्या मंद भाग्य का रोना है ?

पुरुषार्थ भाग्य की पंक्ति प्रथम
पुरुषार्थ भाग्य का है उद्गम
पुरुषार्थ भाग्य की परिभाषा
पुरुषार्थ प्रबल तो भाग्य परम
पौरुष के संकेतों पर ही-
इसको उठना है, सोना है।
क्या मंद भाग्य का रोना है ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रोने से विधि भी रोता है
सोने से वह भी सोता है
जब हाथ उठा कुछ करने को
हीरों के हार पिरोता है
फिर स्वर्ग यहां से दूर नहीं
यह कोना या वह कोना है।
क्या मंद भाग्य का रोना है ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

65. पुरुषो, अपनी हार न मानो

पुरुषो, अपनी हार न मानो।।
अक्षय कोष शक्ति का भीतर
एक बार उसको पहचानो।
पुरुषो, अपनी हार न मानो।।

बार – बार दुर्दिन देखा है
बार – बार चोटें खाई है
असफलता, अपमान, पराजय
पीड़ा पर पीड़ा आई है
आघातों – प्रत्याघातों को
घातक, क्रूर प्रहार न मानो।
पुरुषो, अपनी हार न मानो।।

जो निराश होकर रोता है
प्रकृति उसे सायास रुलाती
तूफानों से जो लड़ता है
उसको जयमाला पहनाती
अपने गर्वीले मस्तक पर
भूधर को भी भार न मानो।
पुरुषो, अपनी हार न मानो।।

जो इस धरती पर आ जाता
उसको लड़ना ही पड़ता है
हर सरिता को चट्टानों से
निशिदिन भिड़ना ही पड़ता है
अन्धकार के बिना ज्योति का
होता है संसार न मानो।
पुरुषो, अपनी हार न मानो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीन लोक की निखिल सम्पदा
मन - मंदिर में धरी हुई है
सिद्धि-प्राप्ति की क्षमता इसमें
कूट - कूट कर भरी हुई है
रत्नाकर के तट पर ही पर
रत्नों का संभार न मानो।
पुरुषो, अपनी हार न मानो।।

मंजिल के सन्निकट पहुँच कर
पथिक प्रायशः मुड़ जाता है
पास नीड़ के आकर पंछी
फिर अनन्त में उड़ जाता है
भाण्डागार निहित अंतस् में
तुम उसको उस पार न मानो।
पुरुषो, अपनी हार न मानो।।
अक्षय कोश शक्ति का भीतर
एक बार उसको पहचानो।
पुरुषो, अपनी हार न मानो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

66. हार से न निराश होते

हार से न निराश होते स्वाभिमानी।।
ह्रास ही उत्थान की रचता कहानी।
हार से न निराश होते स्वाभिमानी।।

विपिन में प्रतिवर्ष जो पतझार आता
विटप के फल-फूल, पत्र उतार जाता
वह बसन्त बहार भी लाता सुहानी।
हार से न निराश होते स्वाभिमानी।।

क्षीण होती इन्दु की क्रमशः कलाएं
गगन में घन घहरती तम की घटाएं
किन्तु राका है अमा के बाद आनी।
हार से न निराश होते स्वाभिमानी।।

उदधि में भाटा सुनिश्चित ज्वार लाता
सृष्टि का संकेत दे संहार जाता
निहित निशि में दिवस की प्रतिमा पुरानी।
हार से न निराश होते स्वाभिमानी।।

प्रकृति का कण-कण उसे आलोक देता
लक्ष्य पर जो पूर्ण जीवन झोक देता
वह बहाता उपल से भी विमल पानी।
हार से न निराश होते स्वाभिमानी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

67. मत समझो मैं हार रही हूँ

मत समझो मैं हार रही हूँ।।
गई कभी उस पार भले ही और कभी इस पार रही हूँ।
मत समझो मैं हार रही हूँ।।

थी व्याकुल संघर्षों से पर अब उनसे मैं प्यार करूंगी
भीत और चिन्तित जिनसे थी उन्हें गले का हार करूंगी
नैसर्गिक अभिशापों को भी मान समुद उपहार रही हूँ।
मत समझो मैं हार रही हूँ।।

खट्टे से खट्टे नीबू में खांड मिलाना सीखा मैंने
जहर हलाहल पी – पीकर व्यापार चलाना सीखा मैंने
धगधगते अंगारों पर चल जीवन – स्वर्ण निखार रही हूँ।
मत समझो मैं हार रही हूँ।।

काली घोर घटाओं में भी मैं सागर की सीप बनूंगी
और अमा की अँधियारी में मिट्टी का लघु दीप बनूंगी
मझधारों में भी मैं अपनी थाम स्वयं पतवार रही हूँ।
मत समझो मैं हार रही हूँ।।

आग लगाना चाहे कोई तो मैं जल बन कर प्रस्तुत हूँ
अगर गाड़ भी दे धरती में तो मैं बीज बहुत विश्रुत हूँ
तापों, उत्तापों में पल कर भावों को संस्कार रही हूँ।
मत समझो मैं हार रही हूँ।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

68. आंसू में क्या छिपी

कैसे कह दूं यह जीवन वरदान नहीं है ?
आंसू में क्या छिपी मधुर मुस्कान नहीं है ?
कैसे कह दूं यह जीवन वरदान नहीं है ?

माना, पंछी को उलझाने जाल बिछे हैं
कपट, प्रपञ्च, प्रलोभन के धागे तिरछे हैं
भोला - भाला षड्यंत्रों को समझ न पाता
फड़फड़ करता निरपराध उसमें फँस जाता
हर उलझन क्या सुलझन का विज्ञान नहीं है ?
कैसे कह दूं यह जीवन वरदान नहीं है ?

चोटें कहीं कलेजे को काटा करती हैं ?
वे तो जीवन की प्रतिमा छांटा करती हैं
रख कर पांवों तले खरोंची जाती छाती
मूर्ति मनोहर शिल्पी की छेनी गढ़ जाती
पूज्य अंत में बनता क्या पाषाण नहीं है ?
कैसे कह दूं यह जीवन वरदान नहीं है ?

उदर चीर धरती का कब्रें कई बनाई
जीवित बीजों की काया उनमें दफनाई
सांस रोक कर ताप, भार सहते जाते हैं
पुनः अंकुरित होकर वे बाहर आते हैं
बीज-बीज तरु बनता क्या फलवान नहीं है ?
कैसे कह दूं यह जीवन वरदान नहीं है ?

जलने वालों से ही सदा प्रकाश मिला है
चलने वालों से पथ का आश्वास मिला है
शीत-ताप, झंझानिल से जो सदा लड़े हैं
वे पादप अब फल-फूलों से लदे पड़े हैं
गिरने से पहले होता उत्थान नहीं है।
कैसे कह दूं यह जीवन वरदान नहीं है?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

69. सुधा किसी को मिल पाए तो

सुधा किसी को मिल पाए तो गरलपान भी तुम कर जाओ।।
जीवन मिले किसी को यदि तो हँसते-हँसते तुम मर जाओ।
सुधा किसी को मिल पाए तो गरलपान भी तुम कर जाओ।।

जिसे दिया सम्मान उसी से उतना ही अपमान मिला है
वरदानों की प्रतिक्रिया में अभिशापों का दान मिला है
तोष इसी से मिले किसी को तो चलते शूलों पर जाओ।
सुधा किसी को मिल पाए तो गरलपान भी तुम कर जाओ।।

सही दिशा में चलने पर भी बहुत लोग तुमसे जलते हैं
भीतर ही भीतर कुढ़ते क्यों स्वप्न मनोवांछित फलते हैं
हृदय किसी का शीतल हो तो पांव अनल पर भी धर जाओ।
सुधा किसी को मिल पाए तो गरलपान भी तुम कर जाओ।।

अनायास उभरी अस्फुट-सी अधर-युगल पर स्मित की रेखा
तुम्हें रुलाने कितनों को ही तभी कुचक्र चलाते देखा
हर्ष किसी को हो तो अञ्चल आंसू से अपना भर जाओ।
सुधा किसी को मिल पाए तो गरलपान भी तुम कर जाओ।।

जूझ - जूझ झंझावातों से ज्यों ही नौका तट पर आई
मझधारों में उसे डुबाने स्वजनों ने ही शक्ति लगाई
मिले किसी को तट इससे तो उतर सिन्धु के भीतर जाओ।
सुधा किसी को मिल पाए तो गरलपान भी तुम कर जाओ।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

70. तप की सौरभ

तप की सौरभ से सुरभित धरणीतल है।।
नन्दनवन में भी दुर्लभ यह परिमल है।

यह चौथा मार्ग मुक्ति का कठिन बहुत है
हो सकती घड़ी कसौटी की प्रस्तुत है
पर कर्म-निर्जरा का सुन्दर साधन है
होता इससे आत्मा का आराधन है
धुल जाता कोटि भवों का संचित मल है।
तप की सौरभ से सुरभित धरणीतल है।।

जो पाप भयंकर जीवन भर हैं करते
वे भी तप कर भवसागर पार उतरते
परिसर बन जाता तीर्थ तपस्या द्वारा
बहने लगती है परमशान्ति की धारा
मानस हो जाता स्फटिक तुल्य निर्मल है।
तप की सौरभ से सुरभित धरणीतल है।।

इसके प्रभाव से मिटते घोर उपद्रव
नतमस्तक होते स्वतः देवता, दानव
औषधि यह अन्तर व्याघि मिटाने वाली
संताप मुक्त होने की एक प्रणाली
जो जंगल में भी कर देती मंगल है।
तप की सौरभ से सुरभित धरणीतल है।।

जिनशासन तपस्तेज से हुआ उजागर
हो चुके तपस्वी अगणित गुण के आकर
होंगे भविष्य में, वर्तमान में भी हैं
चढ़ रहे उत्तरोत्तर जो तप - श्रेणी हैं
संकल्प-शक्ति जिनकी अविकल, अविचल है।
तप की सौरभ से सुरभित धरणीतल है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

71. तप का है ऊँचा स्थान

तप का है ऊँचा स्थान जैन शासन में।।
अप्रतिम मूल्य होता इसका जीवन में।
तप का है ऊँचा स्थान जैन शासन में।।

तप आदिनाथ प्रभु ने स्वीकार किया था
तप महावीर ने अंगीकार किया था
अपना कर इसको योगी, यति, संन्यासी
बन्धन-विमुक्त हो गए आत्म-विश्वासी
है व्याप्त आज भी यश जिनका त्रिभुवन में।
तप का है ऊँचा स्थान जैन शासन में।।

निन्दा को माना जाता दसवां रस है
चुगली करना भी लगता सुखद, सरस है
सम्पन्न किसी को देख सरल है जलना
आ जाता अपने आप अपर को छलना
पर कठिन जीभ को रखना अनुशासन में।
तप का है ऊँचा स्थान जैन शासन में।।

यदि उग्र तपस्वी समता का साधक है
आलम्बन-हीन ध्यान का आराधक है
तो रासायनिक एक परिवर्तन होता
बहने लगता है सुख-समृद्धि का सोता
कांटों के बिना कुसुम खिलते उपवन में।
तप का है ऊँचा स्थान जैन शासन में।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

72. चल पड़े जो चरण

चल पड़े जो चरण चलते हैं चलेंगे।।
जल उठे जो दीप जलते हैं जलेंगे।
चल पड़े जो चरण चलते हैं चलेंगे।।

रोकना या टोकना, प्रतिवाद करना
वृत्ति मानव की रही अपवाद करना
परिस्थिति में पर न ढलते हैं ढलेंगे।
चल पड़े जो चरण चलते हैं चलेंगे।।

रुद्ध कर सकता नहीं व्यवधान भीषण
लौ अकम्पित है चले पवमान भीषण
विपद में ही वीर पलते हैं पलेंगे।
चल पड़े जो चरण चलते हैं चलेंगे।।

निरन्तर लयबद्ध गति, संकल्प-बल है
तो पहुँचना हिमशिखर पर कुतूहल है
बीज ही बन वृक्ष फलते हैं फलेंगे।
चल पड़े जो चरण चलते हैं चलेंगे।।

कठिन क्या फिर तारकों को तोड़ लाना
और सुरसरि को धरा पर मोड़ लाना
लक्ष्य से साधक न टलते हैं टलेंगे।
चल पड़े जो चरण चलते हैं चलेंगे।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

73. चरण चलते हैं चलेंगे

साधना – पथ पर हमेशा चरण चलते हैं चलेंगे।।
जूझ झंझावात से भी दीप जलते हैं जलेंगे।
साधना – पथ पर हमेशा चरण चलते हैं चलेंगे।।

घन तमिस्रा के बिना क्या ज्योति का कुछ अर्थ होता ?
झिलमिलाते तारकों का जगमगाना व्यर्थ होता
ये सदा तम–तोम में ही सहज पलते हैं पलेंगे।
साधना–पथ पर हमेशा चरण चलते हैं चलेंगे।।

क्रूर मानव मसल कर अस्तित्व सुमनों का मिटाते
प्यार का मिथ्या प्रलोभन दे मधुप रस चूस जाते
नियति ही यह – कंटकों में फूल फलते हैं फलेंगे।
साधना – पथ पर हमेशा चरण चलते हैं चलेंगे।।

उतर सागर में गए तो कांपना मझधार से क्या ?
पा लिया जब सत्य को फिर मापना संसार से क्या ?
स्वप्न में भी लक्ष्य से कब शूर टलते हैं टलेंगे।
साधना–पथ पर हमेशा चरण चलते हैं चलेंगे।।

समर्पित तन–मन किया फिर मोह प्राणों का रहे क्यों?
स्वयं पर विश्वास जिसका, लोकधारा में बहे क्यों ?
शैल विघ्नों के नियमतः हाथ मलते हैं मलेंगे।
साधना – पथ पर हमेशा चरण चलते हैं चलेंगे।।
जूझ झंझावात से भी दीप जलते हैं जलेंगे।
साधना – पथ पर हमेशा चरण चलते हैं चलेंगे।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

74. पहले अपना घर संभालो

पहले अपना घर संभालो।।
काचमहल में खड़े-खड़े यों पथिकों पर पत्थर न उछालो।
पहले अपना घर संभालो।।

छोटी-सी त्रुटि देख किसी की ओर अंगुली एक उठाई
मुड़ कर अपनी ओर तीन ने कर दी उद्घाटित सच्चाई
भूलों के भण्डार स्वयं हो उन्हें टटोल-टटोल निकालो।
पहले अपना घर संभालो।।

दीख दूर से गई उठ रही धू-धू कर लपटें पर्वत पर
हो जाएगी हरीतिमा क्षत-चिन्ता से आन्दोलित अन्तर
पांवों तले धधकती ज्वाला पहले उस पर पानी डालो।
पहले अपना घर संभालो।।

मुड़ते जिधर, उधर से ही दुर्गन्ध दुर्गुणों की आती है
घृणा, ग्लानि से रुकती सांसें सहसा भौंह सिकुड़ जाती है
भीतर जमे हुए अवकर पर थोड़ी-सी तो दृष्टि टिका लो।
पहले अपना घर संभालो।।

किसी अपरिचित नयन-कमल में तिल जितना हो धब्बा काला
विषय बना चर्चा का उसको जाता बारम्बार उछाला
विकृत आँख अपनी चेचक से उसको तो कुछ स्वस्थ बना लो।
पहले अपना घर संभालो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

75. यदि अपना इतिहास पढ़ो तो

यदि अपना इतिहास पढ़ो तो।।
स्खलनाओं से भरा पड़ा है–
लेकर के कुछ पास पढ़ो तो।
यदि अपना इतिहास पढ़ो तो।।

औरों की तो दिख जाती थी
तिल जितनी भी कुत्सित रेखा
अपने बड़े – बड़े धब्बों को
एक बार भी किन्तु न देखा
कृत्रिम सुयश स्वयं का सुन कर
फूल गर्व से जाती छाती
किसी अन्य की सही प्रशंसा
कभी स्वप्न में भी न सुहाती

सब अपने से बौने लगते
भूधर या आकाश चढ़ो तो।
यदि अपना इतिहास पढ़ो तो।।

चाहे अनचाहे ही तुमने
कितने किए प्रमाद नहीं थे
मानव भूलों का पुतला है
तुम इसका अपवाद नहीं थे
बड़ी–बड़ी त्रुटियां विधिपूर्वक
सहजतया जा सके छिपाई
सबसे छोटी भूल याद कर
इसीलिए खुल कर बतलाई

महाग्रन्थ होगा पापों का
यदि देने आभास बढ़ो तो।
यदि अपना इतिहास पढ़ो तो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

न्याय–नीति का पहन मुखौटा
कई बार अन्याय किया है
उस कल्मष को आवृत करने
हर संभव व्यवसाय किया है
मन – वाणी की एकरूपता
रही नहीं जीवन के रण में
आवेशों के भूत भयावह
नाच उठा करते क्षण – क्षण में
कुत्सित और कुरूप बनेगी
प्रतिमा यदि सायास गढ़ो तो।
यदि अपना इतिहास पढ़ो तो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3. संस्कार- सौरभ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

76. बच्चों की जीवन फुलवारी

बच्चों की जीवन फुलवारी।।
सुरभित हो उसकी हर क्यारी।
बच्चों की जीवन फुलवारी।।

हैं कोरे कागज के समान
बच्चों के मन, मस्तिष्क, प्राण
लेखक जैसे लिख दे अक्षर
विद्रूप, असुन्दर या सुन्दर
वह अमिट रहेगी लिपि सारी।
बच्चों की जीवन फुलवारी।।

बच्चों का कोमल ह्रत्तल है
वह बहुत सरल है, निश्छल है
होता उनमें उपचार नहीं
कोई कृत्रिम व्यवहार नहीं
बाहर भीतर हैं अविकारी।
बच्चों की जीवन फुलवारी।।

है अन्तःकरण बहुत उर्वर
बोएं चाहे पीयूष, जहर
अन्दर ही नहीं पलेंगे वे
फूलेंगे और फलेंगे वे
सर्वत्र रहेंगे सहचारी।
बच्चों की जीवन फुलवारी।।

पड़ता है परिसर का प्रभाव
है ग्रहणशील उनका स्वभाव
जो कहीं देख या सुन लेते
वे उसी पंथ को चुन लेते
बन जाते हैं चिर संस्कारी।
बच्चों की जीवन फुलवारी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

77. बच्चों का जीवन निर्मल है

बच्चों का जीवन निर्मल है।।
गंगाजी का पावन जल है।
बच्चों का जीवन निर्मल है।।

झूठ, कपट की बात नहीं है
दाँव-पेच या घात नहीं है
इसीलिए लगते हैं प्यारे
धरती - नभ के नयन सितारे
नहीं पनप पाया छल बल है।
बच्चों का जीवन निर्मल है।।

आओ बच्चो, पाठ पढ़ाऊं
एक काम की बात बताऊं
भूल - चूक मत बीड़ी पीना
सीधा - सादा जीवन जीना
याद इसे रखना प्रतिपल है।
बच्चों का जीवन निर्मल है।।

पीते हैं शर्बत, ठण्डाई
बादामें भी घुटी घुटाई
दूध बुद्धि को बहुत बढ़ाता
लस्सी, मट्ठा भी मन भाता
किन्तु धुंआ तो हालाहल है।
बच्चों का जीवन निर्मल है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

78. बच्चो, दो संगत पर ध्यान

बच्चो, दो संगत पर ध्यान।।
करना यदि जीवन-निर्माण।
बच्चो, दो संगत पर ध्यान।।

जैसा कोई करता संग
वैसा उस पर चढ़ता रंग
भावित हो जाते मन प्राण।
बच्चो, दो संगत पर ध्यान।।

बुरे मित्र हैं भीषण व्याल
होता जिनमें विष विकराल
कर देते जीवन को म्लान।
बच्चो, दो संगत पर ध्यान।।

कीचड़ से उठती दुर्गन्ध
फूल छोड़ते मधुर सुगन्ध
लो दोनों का अन्तर जान।
बच्चो, दो संगत पर ध्यान।।

कज्जल करता काले हाथ
भटकाता दुर्जन का साथ
छोड़ो इसे हलाहल मान।
बच्चो, दो संगत पर ध्यान।।

था रावण का मात्र पड़ोस
घटा जलधि का गौरव-कोश
लांघ गए उसको हनुमान।
बच्चो, दो संगत पर ध्यान।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

79. बच्चो, कभी न करो प्रमाद।।

बच्चो, कभी न करो प्रमाद।।
सीखो चखना श्रम का स्वाद।
बच्चो, कभी न करो प्रमाद।।

सुख, समृद्धि का भाण्डागार
सकल सिद्धियों का आधार
माना जाता श्रम अविवाद।
बच्चो, कभी न करो प्रमाद।।

जिस पल का हम करते मोल
वह पल बनता रत्न अमोल
सूत्र रखो यह प्रतिपल याद।
बच्चो, कभी न करो प्रमाद।।

निर्धन बन जाते श्रीमान
जड़मति भी विश्रुत विद्वान
श्रम का ही यह पुण्य - प्रसाद।
बच्चो, कभी न करो प्रमाद।।

होता कु - ग्रह का बल क्षीण
विधि लिख देता अंक नवीन
करने से श्रम का अनुवाद।
बच्चो, कभी न करो प्रमाद।।

श्रम से उगता स्वर्ण प्रभात
श्रम ही कल्पवृक्ष विख्यात
देते रहो इसे जल, खाद।
बच्चो, कभी न करो प्रमाद।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

80. बच्चो, है यह भारत देश

बच्चो, है यह भारत देश।।
सत्य - अहिंसानिष्ठ प्रदेश।
बच्चो, है यह भारत देश।।

इसका धर्म अहिंसा है
इसका कर्म अहिंसा है
इसका ध्येय अहिंसा है
इसका श्रेय अहिंसा है
गौरव-मंडित है परिवेश।
बच्चो, है यह भारत देश।।

सारे प्राणी एक समान
सबको प्रिय हैं अपने प्राण
सबमें जीने का उत्साह
मरने की न किसी को चाह
उपजाओ इसलिए न क्लेश।
बच्चो, है यह भारत देश।।

हिंसा बहुत बड़ा है पाप
हिंसक पाता है संताप
औरों को जो देता कष्ट
सुख हो जाता उसका नष्ट
याद रखो यह तथ्य विशेष।
बच्चो, है यह भारत देश।।

जीवन में भी इसे उतार
खुल कर ऐसा करो प्रचार-
''अस्त्रों - शस्त्रों'' के भण्डार
हिंसा का करते विस्तार''
बढ़ता है इनसे विद्वेष।
बच्चो, है यह भारत देश।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सतत अहिंसा का सम्मान
समता का अनुपम वरदान
विश्वशांति का यह आधार
करती मैत्री का संचार
प्रभु का अजर-अमर संदेश।
बच्चो, है यह भारत देश।।
सत्य - अहिंसानिष्ठ प्रदेश।
बच्चो, है यह भारत देश।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

81. बच्चो, तुम गुणवान बनो

बच्चो, तुम गुणवान बनो।।
धरती के अभिमान बनो।
बच्चो, तुम गुणवान बनो।।

भले विधाता जाए रूठ
फिर भी बोलो कभी न झूठ
सच्चे, शुचि इन्सान बनो।
बच्चो, तुम गुणवान बनो।।

हरिश्चन्द्र का जो आदर्श
उसे सामने रखो सहर्ष
ऋषियों की पहचान बनो।
बच्चो, तुम गुणवान बनो।।

सच्चे का होता विश्वास
साक्षी है इसका इतिहास
जाग्रत प्रज्ञावान बनो।
बच्चो, तुम गुणवान बनो।।

सच-धन अक्षय होता है
सच्चा निर्भय सोता है
शूरवीर, सुल्तान बनो।
बच्चो, तुम गुणवान बनो।।

कोई करले जांच कहीं
सच पर आती आंच नहीं
उदाहरण अम्लान बनो।
बच्चो, तुम गुणवान बनो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

82. बोलो बच्चो, मीठे बोल

बोलो बच्चो, मीठे बोल।।
हर अक्षर हीरों से तोल।
बोलो बच्चो, मीठे बोल।।

बोली परिचय है कुल का
कौवे, कोयल, बुलबुल का
कहनी है कल कोई बात
सोचो आज उसे दिन रात
उसमें भी फिर मधुरस घोल।
बोलो बच्चो, मीठे बोल।।

मधुर बोल अनुराग भरा
करता सूखा ठूंठ हरा
भर देता मर्मांतक घाव
औषधि से भी अधिक प्रभाव
देखो अंतस् के दृग् खोल।
बोलो बच्चो, मीठे बोल।।

मीठा बोल सुहाता है
दिल को बहुत लुभाता है
सभी सफलताओं का मूल
राक्षस भी बनते अनुकूल
महामंत्र यह है अनमोल।
बोलो बच्चो, मीठे बोल।।
हर अक्षर हीरों से तोल।
बोलो बच्चो, मीठे बोल।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

83. प्यारे बच्चो, बनो विनीत

प्यारे बच्चो, बनो विनीत।।
लेता विनय जगत को जीत।
प्यारे बच्चो, बनो विनीत।।

तुम हो भारत की संतान
तुम हो धरती के अभिमान
तुम कर सकते नव निर्माण
बन सकते हो तुम्हीं महान
तुम्हीं राष्ट्र की नींव पुनीत।
प्यारे बच्चो, बनो विनीत।।

झुकते हैं तरुवर फलवान
झुकते हैं ज्ञानी गुणवान
झुकने से मिलता सम्मान
गुरुजन करते ज्ञान प्रदान
झुकने का सीखो संगीत।
प्यारे बच्चो, बनो विनीत।।

विनम्रता है फूल समान
अहंकार है शूल समान
पीड़ित करता पग को शूल
सदा सुगन्धि बांटता फूल
प्रीतिपात्र किसका अविनीत ?
प्यारे बच्चो, बनो विनीत।।
लेता विनय जगत को जीत।
प्यारे बच्चो, बनो विनीत।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

84. प्यारे बच्चो, सीखो ज्ञान

प्यारे बच्चो, सीखो ज्ञान।।
शिक्षा जीवन का वरदान।
प्यारे बच्चो, सीखो ज्ञान।।

चाहे कहीं प्रवास करो
विद्या का अभ्यास करो
श्रम का फल है मधुर महान।
प्यारे बच्चो, सीखो ज्ञान।।

गर्मी में गोरोचन ज्ञान
नयनहीन का लोचन ज्ञान
करता अंतर्दृष्टि प्रदान।
प्यारे बच्चो, सीखो ज्ञान।।

विद्या विद्रूपों का रूप
विद्या धन अक्षीण, अनूप
सदा युवा रहता विद्वान।
प्यारे बच्चो, सीखो ज्ञान।।

जो पल व्यर्थ गँवाता है
उसे न कुछ भी आता है
रह जाता है वह नादान।
प्यारे बच्चो, सीखो ज्ञान।।

कामधेनु, चिंतामणि ज्ञान
रत्नों, मणियों की खनि ज्ञान
खोद निकालो अतुल निधान।
प्यारे बच्चो, सीखो ज्ञान।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

85. प्यारे बच्चो, करो न क्रोध

प्यारे बच्चो, करो न क्रोध।।
है विकास में यह अवरोध।
प्यारे बच्चो, करो न क्रोध।।

दुर्बलता का लक्षण क्रोध
जीवन का अपलक्षण क्रोध
घर को करता रौरव क्रोध
हरता कुल का गौरव क्रोध
इसकी सन्तति है प्रतिशोध।
प्यारे बच्चो, करो न क्रोध।।

क्रोधी को रहता संताप
करना पड़ता पश्चात्ताप
स्मृति हो जाती उसकी क्षीण
सीख न सकता पाठ नवीन
खो जाता है बोध, प्रबोध।
प्यारे बच्चो, करो न क्रोध।।

होते ही आहत अभिमान
क्रोध भड़कता आग समान
याद न रहते प्रीति-प्रबन्ध
टूट बिखरते सब सम्बन्ध
फैला लेता पांव विरोध।
प्यारे बच्चो, करो न क्रोध।।

क्रोधी की निश्चित है हार
कहीं न पाता वह सत्कार
नहीं फटकता कोई पास
अपने भी करते उपहास
आवश्यक है क्रोध - निरोध।
प्यारे बच्चो, करो न क्रोध।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

86. सीखो आसन, प्राणायाम

सीखो आसन, प्राणायाम।।
खुले शांति, सुख के आयाम।
सीखो आसन, प्राणायाम।।

पहले होगा तन, मन स्वस्थ
तभी बन सकोगे आत्मस्थ
अतः प्रयोग करो अविराम।
सीखो आसन, प्राणायाम।।

रहे नियंत्रित नाड़ी - तंत्र
शक्ति-जागरण का यह मंत्र
क्रिया कठिन, सुन्दर परिणाम।
सीखो आसन, प्राणायाम।।

प्राणवायु की होती पूर्ति
आती अंग-अंग में स्फूर्ति
लेती तन्द्रा स्वयं विराम।
सीखो आसन, प्राणायाम।।

रहता दिनभर चित्त प्रसन्न
शुद्ध भावना से सम्पन्न
करने से प्रातः व्यायाम।
सीखो आसन, प्राणायाम।।
खुले शांति, सुख के आयाम।
सीखो आसन, प्राणायाम।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

87. सीखो बच्चो, प्रेक्षाध्यान

सीखो बच्चो, प्रेक्षाध्यान।।
जीने की यह कला महान।
सीखो बच्चो, प्रेक्षाध्यान।।

प्रेक्षा पीयूषी धारा
शांति सुलभ इसके द्वारा
करती है संतुलन प्रदान।
सीखो बच्चो, प्रेक्षाध्यान।।

पंथ भरे हैं शूलों से
खिले उन्हीं पर फूलों-से
प्रेक्षा है ऐसा विज्ञान।
सीखो बच्चो, प्रेक्षाध्यान।।

मन तनाव से रहता ग्रस्त
विविध विकल्पों से संत्रस्त
प्रेक्षा इसका सही निदान।
सीखो बच्चो, प्रेक्षाध्यान।।

दूषित चिर संस्कार भगा
देती सत्संस्कार जगा
लिखती सुख का नया विधान।
सीखो बच्चो, प्रेक्षाध्यान।।

दिव्य ज्योति से ओतप्रोत
होगा प्रकट स्वयं उद्योत
तुम्हें बना देगा द्युतिमान।
सीखो बच्चो, प्रेक्षाध्यान।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

88. हो गया नूतन सवेरा

हो गया नूतन सवेरा।।
भीत हो भागा अंधेरा।
हो गया नूतन सवेरा।।

पौ फटी प्राची हँसी है
देख सुत को उल्लसी है
अधर पर अरविन्द के भी-
मुस्कराहट आ बसी है
उठा निद्रा ने लिया है
रात भर का जमा डेरा।
हो गया नूतन सवेरा।।

रवि-विरह से विकल अंबर
रो रहा था नयन भर - भर
कर रहा आश्वस्त दिनपति-
अब स्वयं फैला किरण-कर
विकस्वर सूरजमुखी ने
चित्र मनमोहक उकेरा।
हो गया नूतन सवेरा।।

जग लगा है जगमगाने
शंख जागृति का बजाने
समुत्सुक नीरव दिशाएं-
सुप्रभाती राग गाने
उड़ चले खग चहचहाते
छोड़ कर अपना बसेरा।
हो गया नूतन सवेरा।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रभु भजन में भक्त तन्मय
चित्त भक्ति – विभोर अतिशय
आत्म – सागर में उतर कर–
पा रहे आनन्द अक्षय
गौण हैं सम्बन्ध जग के।
कौन तेरा कौन मेरा।
हो गया नूतन सवेरा।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

89. अध्यात्म का आकाश

आज क्यों ओझल अमल अध्यात्म का आकाश ?
वेग से बढ़ने लगा विज्ञान में विश्वास ?

हैं उपेक्षित मूल, सींचे जा रहे फल-फूल
हैं अपेक्षित आम, करते वपन किन्तु बबूल
क्या कभी पाषाणखण्डों पर खिला मधुमास ?
आज क्यों ओझल .....

त्यक्त फल, छिलका बना है आज रुचिकर भक्ष्य
बाड़ पर ही ध्यान केन्द्रित गौण कृषि का लक्ष्य
शुष्क तिनकों से बुझी है कब किसी की प्यास ?
आज क्यों ओझल .....

चन्द्र - मंगललोक की भरते सुदूर उड़ान
क्या रहस्यमयी नहीं यह वसुन्धरा महान ?
स्वर्ग इसको ही बनाने का न क्यों आयास ?
आज क्यों ओझल .....

युग चरण का संतुलन ही स्वस्थ गति का सूत्र
स्निग्धता का अंकुरण ही स्वस्थ मति का सूत्र
वाम-दक्षिण नेत्र से हो प्राप्त तुल्य प्रकाश।
आज क्यों ओझल .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

90. कभी था उपवन में मधुमास

कभी था उपवन में मधुमास।।
किन्तु आज अवशेष मात्र है
वह स्वर्णिम इतिहास।
कभी था उपवन में मधुमास।।

पत्ता - पत्ता हरा - भरा था
स्वर्ग स्वयं उन पर उतरा था
दिव्य छटा पथिकों के मन में
भरती नव उल्लास।
कभी था उपवन में मधुमास।।

पंक्तिबद्ध पादप लहराते
अपनी अद्‌भुत छवि दिखलाते
हर शाखा-प्रतिशाखा पर था
सुन्दरता का लास।
कभी था उपवन में मधुमास।।

सायं- प्रात सुमन मुस्काते
अपनी सौरभ समुद लुटाते
घनीभूत पीड़ा भी लेती
जिन्हें देख संन्यास।
कभी था उपवन में मधुमास।।

पक्षी मीठा गान सुनाते
अलिगण दिङ्‌मण्डल गुंजाते
पंचम स्वर सुन विस्मृत होती
भूख - प्यास की त्रास।
कभी था उपवन में मधुमास।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वहां ठूंठ ही आज खड़े हैं
पत्ते भू पर झड़े पड़े हैं
पतझड़ के कुसमय में आता
कौन किसी के पास ?
कभी था उपवन में मधुमास।।

पक्षी भी ऊपर से उड़ते
पंथी पथ से वापिस मुड़ते
कालक्रम से बदल गए हैं
भूमण्डल आकाश।
कभी था उपवन में मधुमास।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

91. कभी सिर पर थे काले केश

कभी सिर पर थे काले केश।।
हाय, ढूंढ़ने पर ही मिलते अब उनके अवशेष।
कभी सिर पर थे काले केश।।

सघन, सुहाने, सुन्दर, काले
लम्बे - लम्बे थे घुंघराले
किन्तु खोपड़ी पर लगते अब केवल घास विशेष।
कभी सिर पर थे काले केश।।

था महत्त्व जिनका जीवन में
चले गए वे भर यौवन में
स्मृति या सपने में ही उनका बसा हुआ है देश।
कभी सिर पर थे काले केश।।

हृदय-कमल जो रहे खिलाते
आज मौत की याद दिलाते
अपने भी बन गए पराए देते हैं संक्लेश।
कभी सिर पर थे काले केश।।
हाय, ढूंढ़ने पर ही मिलते अब उनके अवशेष।
कभी सिर पर थे काले केश।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

92. कभी था सुन्दर यही शरीर

कभी था सुन्दर यही शरीर।।
उस सुन्दरता की स्मृति जाती-
आज कलेजा चीर।
कभी था सुन्दर यही शरीर।।

हाथों - पांवों में थी लाली
कोमलता की छटा निराली
अब बिवाईयों की कठोरता
करती हृदय अधीर।
कभी था सुन्दर यही शरीर।।

लोचन मेरे बहुत सुहाते
मृग, खंजन की उपमा पाते
भरे हुए हैं वे गीड़ों से
बहता रहता नीर।
कभी था सुन्दर यही शरीर।।

मांसल, पुष्ट गात्र था प्यारा
सूख हुआ कांटे - सा सारा
पड़ी झुर्रियां, छिटकी चमड़ी
देख उपजती पीर।
कभी था सुन्दर यही शरीर।।

दाड़िम-सी दंतावलि की छवि
वर्णन करते स्वयं महाकवि
टूट गई वह, अब मुश्किल से-
खाई जाती खीर।
कभी था सुन्दर यही शरीर।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्वेत कमल – सा हँसता–खिलता
मुखमंडल शशधर से मिलता
चिपके जबड़े आज बनाते–
चिंतन को गंभीर।
कभी था सुन्दर यही शरीर।।

बचपन में जो मुझे खिलाते
वे ही अब पहचान न पाते
अनचाहे भी अथ से इति तक
जर्जर हुआ कुटीर।
कभी था सुन्दर यही शरीर।।
उस सुन्दरता की स्मृति जाती–
आज कलेजा चीर।
कभी था सुन्दर यही शरीर।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

93. यह जीवन एक कहानी है

यह जीवन एक कहानी है।।
सरिता का बहता पानी है।
यह जीवन एक कहानी है।।
घनमाला में विद्युत्प्रकाश
कागज की नौका पर निवास
सुरधनु का आकर्षक विकास
टहनी पर पत्ते का प्रवास
स्थिर रहता इतना प्राणी है।
यह जीवन एक कहानी है।।

ऊषा का कुंकुम-युक्त भाल
सन्ध्या का अनुपम रंग लाल
पश्चिम रजनी का स्वप्नजाल
मृद्भाण्ड, सलिल-बुद्बुद् विशाल
इतनी-सी मिली जवानी है।
यह जीवन एक कहानी है।।

आरम्भ-अन्त हैं आसपास
रहता विलुप्त परिहास-हास
प्रत्येक पात्र का क्षणिक-लास
उच्छ्वास-श्वास का अविश्वास
चलती विधि की मनमानी है।
यह जीवन एक कहानी है।।
सरिता का बहता पानी है।
यह जीवन एक कहानी है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

94. भिक्षुक का अभिनन्दन क्या ?

भिक्षुक का अभिनन्दन क्या ?

रहने को आवास नहीं है
पैसा जिसके पास नहीं है
वैभव और विलास नहीं है
फिर उसको अभिवन्दन क्या ?
भिक्षुक का अभिनन्दन क्या ?

सुख में निर्मर्याद नहीं है
शूलों पर अवसाद नहीं है
रुकना बिल्कुल याद नहीं है
उन चरणों को स्यन्दन क्या ?
भिक्षुक का अभिनन्दन क्या ?

आवेशों की आग नहीं है
मन में राग-विराग नहीं है
कोई विषम विभाग नहीं है
उसे गीत या क्रन्दन क्या ?
भिक्षुक का अभिनन्दन क्या ?

यशोगान सरिताएं गाती
पर्वतमाला शीश झुकाती
प्रकृति प्रफुल्लित पुष्प चढ़ाती
उस मस्तक को चन्दन क्या ?
भिक्षुक का अभिनन्दन क्या ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

95. संतों का कैसा स्वागत ?

संतों का कैसा स्वागत ?
जो कि अकिंचन अभ्यागत।
संतों का कैसा स्वागत ?

जिनका निश्चित स्थान नहीं है
खड़ा कहीं संस्थान नहीं है
सुख-दुख का अनुमान नहीं है
है न पास में स्वर्ण- रजत।
संतों का कैसा स्वागत ?

पंथ कण्टकाकीर्ण बहुत है
विषम, विकट, विस्तीर्ण बहुत है
उपलपूर्ण संकीर्ण बहुत है
पर चलना है उन्हें सतत।
संतों का कैसा स्वागत ?

सभी जगह नवनीत न मिलता
खान-पान निर्णीत न मिलता
मनचाहा संगीत न मिलता
फिर भी रहते हैं संयत।
संतों का कैसा स्वागत ?

जीवन निर्मर्याद न होता
क्षण-क्षण हर्ष-विषाद न होता
स्तुति-निंदा में स्वाद न होता
सत्य-अहिंसा जिनका व्रत।
संतों का कैसा स्वागत ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अंतर्मुखी विचार लिये हैं
मानवीय व्यवहार लिये हैं
जन-जन के प्रति प्यार लिये हैं
विगत - अनागत से उपरत।
संतों का कैसा स्वागत ?
जो कि अकिंचन अभ्यागत।
संतों का कैसा स्वागत ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

96. पानी बहता ही निर्मल है

संतजनों का कैसा स्वागत कैसी अरे विदाई ?
'पानी बहता ही निर्मल है' चली कहावत आई।
संतजनों का कैसा स्वागत कैसी अरे विदाई ?

झलमल-झलमल करते तारे निशि में नीलगगन में
नव उल्लास, उमंगे भरते धरती के कण-कण में
उठता ज्वार कल्पनाओं का जिन्हें देख कवि-मन में
प्रातः हो जाते वे ओझल छोड़ छटा चिन्तन में
उस अदृश्यता को कह सकते क्या हम बिछुड़न स्थायी?
संतजनों का कैसा स्वागत कैसी अरे विदाई ?

बहुत कठिन इन प्रशस्तियों का इतना भार उठाना
इनको सिर पर रख कर कैसे संभव है चल पाना
दुबले-पतले पथिकों को तो हलका ही रहने दो
पतितपावनी गंगा बन कर अविरल ही बहने दो
अप्रतिबद्धविहारी इनके लिए जगत है भाई।
संतजनों का कैसा स्वागत कैसी अरे विदाई ?

टिमटिम कर जलते रहना ही दीपक का जीवन है
सूर्य-चन्द्र-सागर ज्यों इनका 'चरैवेति' यह प्रण है
सरिताओं की सलिल-सम्पदा के उद्गम भूधर हैं
ये भी हैं रश्मियां-मात्र आलोक-पुञ्ज गुरुवर हैं
युगनयनों में प्रतिमा जिनकी रहती सदा समाई।
संतजनों का कैसा स्वागत कैसी अरे विदाई ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

97. उस महापुरुष को नमस्कार

उस महापुरुष को नमस्कार।।

जो दीपक बन कर जला सदा
तीखी शूलों पर चला सदा
शतशाखी फूला फला सदा
उपलब्ध प्रकृति से पुरस्कार।
उस महापुरुष को नमस्कार।।

जिसने दुखियों को सहलाया
जग को करुणा से नहलाया
जो युग का वैभव कहलाया
दिखलाया द्वन्द्वों का कगार।
उस महापुरुष को नमस्कार।।

उसका मरना भी है जीवन
स्मृति कर-कर जिसकी लाखों जन
हो जाते विकल, व्यथित उन्मन
करते गुण - गौरव का प्रसार।
उस महापुरुष को नमस्कार।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

98. हे दिव्य ज्योति, तुमको प्रणाम

हे दिव्य ज्योति, तुमको प्रणाम।।
स्मृति में छवि वह नयनाभिराम।
हे दिव्य ज्योति, तुमको प्रणाम।।

भर यौवन में संसार त्याग
सम्पन्न,सुखी परिवार त्याग
धन–वैभव अपरम्पार त्याग
स्वजनों का हार्दिक प्यार त्याग
संयम में निरत हुई निकाम।
हे दिव्य ज्योति, तुमको प्रणाम।।

अकलुष उज्ज्वल आचार रहा
जीवन सदैव निर्भार रहा
नभ – धरती का शृंगार रहा
बन कर अमूल्य उपहार रहा
युग–पट पर अंकित पुण्य नाम।
हे दिव्य ज्योति, तुमको प्रणाम।।

नवनीत–मृदुल अन्तस्तल था
ऋजुता को छू न सका छल था
श्रमदीप प्रज्ज्वलित अनुपल था
हर स्थिति में अमित आत्मबल था
पा संघ – शरण थी तुष्टकाम।
हे दिव्य ज्योति, तुमको प्रणाम।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

समता में पादन्यास किया
श्रद्धा से सुरभित श्वास किया
हर पतझड़ को मधुमास किया
विश्वास दिया, विश्वास लिया
अग-जग गौरव गाता ललाम।
हे दिव्य ज्योति, तुमको प्रणाम।।
स्मृति में छवि वह नयनाभिराम।
हे दिव्य ज्योति, तुमको प्रणाम।।

साध्वीश्री हरकंवरजी (फतेहपुर) के प्रति

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

99. है फूल वही जो प्रभु चरणों में चढ़ता

है फूल वही जो प्रभु चरणों में चढ़ता।।
सौरभ - श्री से इतिहास अनोखा गढ़ता।
है फूल वही जो प्रभु चरणों में चढ़ता।।

तप, संयम से भावित जिसका अन्तर्मन
सौहार्द, स्नेह से पूरित जिसका कण-कण
व्यक्तित्व सुसज्जित आध्यात्मिक वैभव से-
नैसर्गिक कोमलता, आर्जव, मार्दव से
उपयुक्त स्थान पा मोल सौगुणा बढ़ता।
है फूल वही जो प्रभु चरणों में चढ़ता।।

बचपन में आत्म - प्रेरणा से वैरागी
जो सिंहवृत्ति से बन पाए गृहत्यागी
भावों में ऊर्ध्वारोह उत्तरोत्तर है
श्रद्धा - संपोषित रत्नत्रयी प्रखर है
पाताल - स्पर्शिनी हो संकल्प सुदृढ़ता।
है फूल वही जो प्रभु चरणों में चढ़ता।।

आत्मा की क्षमता से परिचित हो जाए
जो स्वयं जगे, सोया संसार जगाए
संचित निधि परहित में निःस्वार्थ लुटाए
जिसके पदचिह्न न मिटते कभी मिटाए
प्रमुदित युग गौरव-गाथा गाता, पढ़ता।
है फूल वही जो प्रभु चरणों में चढ़ता।।

वनमाली को रखता स्मृति में संजोए
बहुमूल्य बीज श्रमपूर्वक जिसने बोए
अभिषिक्त अनवरत किया स्वेद-सीकर से
उमड़े उसके प्रति कृतज्ञता भीतर से
रह कर चिरऋणी स्वर्ण में मुक्ता मढ़ता।
है फूल वही जो प्रभु चरणों में चढ़ता।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

100. काल की विचित्र गति

इस क्रूर काल से हार सभी ने मानी ।।
निर्दय, नृशंस बन करता यह मनमानी।
इस क्रूर .....

डाली पर फूल दीखता है मुस्काता
अपनी सुषमा से उपवन को सरसाता
यह काल एक झटके में उसे गिराता
निष्ठुरता से मिट्टी में हाय! मिलाता
रहती सुगन्धि की लेकिन शेष कहानी
इस क्रूर .....

मालिक हो तीन खण्ड का या चक्रीश्वर
हों अतुल शक्ति सम्पन्न भले तीर्थंकर
गिरता सब पर बिजली की तरह कड़कता
सुनता न किसी की विनती, प्राण हड़पता
पर रहती आदर्शों की अमिट निशानी
इस क्रूर .....

इससे सब डरते यह न किसी से डरता
थकता भी नहीं निरंतर चरता-चरता
किस दिशि से आता निकल किधर से जाता
कोई भी पूर्वाभास नहीं हो पाता
गति विचित्र इसकी रही सदा अनजानी
इस क्रूर .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

101. क्रूर काल

इस क्रूर काल पर बल न किसी का चलता।।
रुकता न एक क्षण टाले कभी न टलता।
इस क्रूर काल .....

हो रंक-राव या मूढ़-महाप्रज्ञाधर
इसकी तकड़ी पर सबका तोल बराबर
यह युवा - वृद्ध का भेद नहीं करता है
पीछे क्या होगा खेद नहीं करता है
हर लेता पल में कुल-दीपक झलमलता
इस क्रूर काल .....

फूलों से शोभित हरी-भरी फुलवारी
सुषमा-समृद्धि से सुरभित क्यारी-क्यारी
मोहक सौरभ सबको आकर्षित करती
मुरझे मानस में नव संजीवन भरती
इसके प्रहार से सारा रंग बदलता
इस क्रूर काल .....

रह जाते सब आशा-अरमान अधूरे
हो पाते नहीं सुनहले सपने पूरे
निरुपाय चिकित्सक इसके सम्मुख सारे
तांत्रिक, मांत्रिक विद्यावादी भी हारे
स्वजनों की चीत्कारों से भी न पिघलता
इस क्रूर काल .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

102. संथारा

जीवन कृतार्थ हो जाता उनका सारा।।
जो अन्त समय में करते हैं संथारा।

श्रावक का एक मनोरथ है संथारा
शूरों, सुलतानों का पथ है संथारा
संथारा – स्वयं मृत्यु के सम्मुख जाना
संथारा – उसको हँस-हँस गले लगाना
अवलोकन अंतस् का अंतस् के द्वारा।
जो अन्त .....

जिस प्राणी की होने वाली जो गति है
वैसी उसकी बन जाया करती मति है
वैसे ही अध्यवसाय, योग आ जाते
अन्तर्मुहूर्त्त पहले भावी बतलाते
हो जाती पूर्ण प्रभावित चेतनधारा।
जो अन्त .....

आजीवन जिस तन को था पाला-पोसा
उस पर रह जाए जब किंचित् न भरोसा
तब जागरूक हो उसका सार निचोड़े
वह छोड़े उससे पहले ही मुख मोड़े
परिकर या संतों का पा सबल सहारा।
जो अन्त .....

तोड़े झटके-से ममता के दृढ़ बन्धन
जोड़े नि:श्रेयस से भावों का स्यन्दन
अर्हत्-सिद्धों का स्मरण शुभंकर मंगल
'धम्मं शरणं' का शाश्वत अक्षय संबल
कर लेते भवसागर का निकट किनारा।
जो अन्त .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

103. कुछ व्यक्ति छोड़ जाते हैं

कुछ व्यक्ति छोड़ जाते हैं छाप धरा पर।।
कर जाते हैं वे अपना वंश उजागर।
कुछ व्यक्ति .....

जीवन तो अस्थिर क्षण-भंगुर चंचल है
खिलता है आज और मुरझाता कल है
हर जन्म मृत्यु की लिए सूचना आता
अंजलि के जल ज्यों प्रतिपल घटता जाता
कोई भी रह न सका है अमर यहां पर।
कुछ व्यक्ति .....

जो गिरते को सहृदय बन गले लगाते
जो मार्ग - भ्रष्ट को सही पंथ पर लाते
कांटे दोनों हाथों से स्वयं उठाते
औरों के लिए सुगंधित सुमन बिछाते
स्मृति में संजो कर रखते जिन्हें चराचर।
कुछ व्यक्ति .....

बालक ज्यों सीधे-सादे जो निश्छल हैं
दुनियां में रह कर भी निर्लेप कमल हैं
आभास अमृत का हो जिनकी वाणी में
जो अपना रूप देखते हर प्राणी में
उनके धूमिल होते न कभी हस्ताक्षर।
कुछ व्यक्ति .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

104. महापुरुष वे सदा अमर हैं

महापुरुष वे सदा अमर हैं।।
जिनका सुयश सुरालय में भी गाते सुरगण एकस्वर हैं।
महापुरुष वे सदा अमर हैं।।

प्रतिपल जो रहते मुस्काते।
हर कांटे को कुसुम बनाते
अपनी मोहक मधुर सुरभि से रहे लुभाते मनोभ्रमर हैं।
महापुरुष वे सदा अमर हैं।।

जो अनुपम आलोक वितरते
नव उल्लास प्रकृति में भरते
अविश्रान्त करते ही रहते अंधकार से महासमर हैं।
महापुरुष वे सदा अमर हैं।।

जिन्हें सहारा देते भूधर
छत्र तानता सूरज ऊपर
हो उत्फुल्ल डुलाते रहते पादप जिनके लिए चमर हैं।
महापुरुष वे सदा अमर हैं।।

उनका महिमामंडित जीवन
किसी विधा का ले आलंबन
जहां पूर्णतः गया उभारा उस पुस्तक के पृष्ठ अजर हैं।
महापुरुष वे सदा अमर हैं।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्राणकोष

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org